नवम्बर-2000

परम ज्योति

तमसो मा ज्योतिर्गमय

सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि अपनी वार्षिक सदस्यता के लिए रु० 70-00 हमारे संपादकीय कार्यालय, अथवा निकटतम "परमज्योति" कार्यकर्त्ता के पास जमा करवा दें तथा अपना पता साफ शब्दों में लिखवा कर रसीद प्राप्त कर लें, धन्यवाद।

सम्पादक

हरे रामा, हरे रामा, रामा रामा, हरे हरे। हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा, हरे हरे।

वर्ष : 1 नवम्बर 2000 अंक: 1

संरक्षक : अनंत श्री विभूषित युगपुरुष स्वामी परमानंद जी महाराज

संस्थापक : संत श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज

परामर्शदाता : स्वामी परमानंद जी सरस्वती

सम्पादक : अरूण शर्मा

सहायक : विजय शर्मा
जोगिन्द्र पाल आनंद

प्रकाशक : संत श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज
अखण्ड परमधाम, नौनाथ-घगवाल
जिला, कठुआ, (जे. के.)

सम्पादकीय कार्यालय : 260-फ्रैंडज सैक्टर, सुभाष नगर, जम्मू-180 005

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्ज, नैशनल हाईवे, बाडी बाह्मणां, जम्मू (जे. एण्ड के.)

एक प्रति रु॰ 7/- *वार्षिक शुल्क रु॰ 70/-*

विषय सूची :

सम्पादकीय

मनुष्य योनी बहुत श्रेष्ठ कर्मों के उपरांत जीव को प्राप्त होती है, इसी योनी के द्वारा जीव अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है अर्थात् मोक्ष, जन्म-मृत्यु से छुटकारा। परंतु इसके विपरीत आज का मानव अपने लक्ष्य को भूल कर सांसारिक भोग-विलासों की ओर आकर्षित होकर सारा जीवन इन्हीं की प्राप्ति के लिए नष्ट कर देता है।

मनुष्य योनी को सार्थक संतों व सद्ग्रंथों द्वारा बतलाये मार्ग पर चलकर, किया जा सकता है। केवल सद्ग्रन्थों को पढ़कर हम सफलता नहीं पा सकते, क्योंकि केवल पढ़ लेने से ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। इसके लिए हमें संतों -सद्गुरुओं की शरण जाना होगा, जो हमें पढ़ाएं भी और उसका अभ्यास भी कराएं।

मनुष्य योनी के उत्थान के लिए ही तो संत इस संसार में अवतरित होते हैं। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, प्रातःकाल स्मरणीय हमारे सद्गुरुदेव जी महाराज द्वारा इस पत्रिका को प्रकाशित किया जा रहा है। अधिकतर पाठक महाराज श्री जी के विषय में जानते ही हैं, परंतु संक्षिप्त परिचय देते हुए मुझे हर्ष प्राप्त होगा। अनंत श्री विभूषित, युगपुरुष स्वामी परमानंद जी के परमप्रिय शिष्य, उच्चकोटि के समाज सुधारक, जन-जन की सदैव भलाई हेतु प्रयासरत, माता श्रीमती गोदावरी देवी एवम् स्व० पंडित नारायण दास जी के सुपुत्र, संत श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज, गांव दबलैहड़, तहसील आर. एस. पुरा निवासी हैं। महाराज श्री गुरु आश्रम सुकराला के संचालक तथा अखण्ड परमधाम, जी०टी०रोड, नौनाथ-घगवाल के प्रधान हैं। महाराज श्री का पूर्ण परिचय आगामी अंकों में विस्तार से प्रकाशित किया जाएगा। महाराज श्री के जीवन का केवल लक्ष्य :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

मनुष्य योनी को अपने वास्तविक लक्ष्य तक पहुंचाने हेतु ही "परमज्योति" पत्रिका का शुभारम्भ महाराज श्री के द्वारा हुआ है। हम पाठकों तक अनंत श्री विभूषित युगपुरुष स्वामी परमानंद जी महाराज हमारे सद्गुरु, जो कि उच्चकोटि के समाजसुधारक भी हैं, संत श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज एवम् अनन्य संतों के पावन आशीष प्रवचन तथा सद्ग्रंथों में वर्णित मानव कल्याण के संदेश, "परमज्योति" के द्वारा पहुंचाने के लिए सदैव प्रयासरत रहेंगे, ऐसा हमारा संकल्प है।

सम्पादक

दृष्टि बदलना है, सृष्टि नहीं

–अनंत श्री विभूषित युग पुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज

आपको अपने परिवार को स्वर्ग बनाने के लिए, अपने परिवार को आनन्दमय बनाने के लिए, अपने घर का वातावरण बहुत अच्छा करना चाहिए। देश को स्वर्ग बनाना अभी आपके हाथ में नहीं है। पर, परिवार को स्वर्ग बनाना तो आपके हाथ में है। परिवार से ज्यादा, आपका जीवन आपके हाथ में है। आप अपने को तो ठीक कर ही सकते हैं। हो सकता है कि आप पत्नी, माँ-बाप, भाई-बहन और अपनी बहू को ठीक न कर सकें; पर, अपने को तो ठीक कर ही सकते हैं।

इसके बाद, आप अपने परिवार को ठीक करने का प्रयास करें। आपने किसी को अपनी बहू समझा है; उसे अपने बेटे की पत्नी बनाया है। हम सोचते हैं कि क्या जरूरत है हमें कि हम उसे किसी की बेटी समझें ; वह आपके बेटे की पत्नी है कि नहीं ? वह आपके बेटे की पत्नी न हो, तो उसे बेशक कष्ट दो। वह आपके बेटे की पत्नी है; बस, इतना ही काफी है। जिसको अपना बना लिया जाता है, उसे दु:ख नहीं दिया जाता, मौत की तो बात ही जाने दो। अपनी बेटी के मरने पर तो रोया जाता है। भगवान् न करे, तुम्हारी घरवाली मरे। पर, यदि वह मर जाए, तो रोओगे कि नहीं? जिसके लिए आदमी रोता है, उसे वह जलाएगा कैसे ?

मैं समझता हूँ कि लोग पत्नी को अपना नहीं समझते। यदि, पत्नी को अपना समझते होते, तो जलाने का प्रश्न ही नहीं था। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि यदि आप माँ-बाप और बेटे को अपना समझेंगे; तो आप अपनी जरूरत के लिए उनको दुख नहीं देंगे। यदि, आप मेरे पिता हैं; तो मैं आपको दु:खी करने के लिए नहीं हूँ। मैं अपनी आवश्यकताएँ आप ही कम करूँगा और आपको दु:ख नहीं दूँगा। मैं कपड़े कम पहन लूँगा; पर, मेरे लिए आप दर-दर मारे-मारे फिरें, यह मैं नहीं चाहूँगा। अपना होता ही वह है, जिसे हम दु:ख न दें। आपका कोई न हो, पर, आप तो अपने हैं ?

मैं समझता हूँ कि लोग पत्नी को अपना नहीं समझते। यदि, पत्नी को अपना समझते होते, तो जलाने का प्रश्न ही नहीं था। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि यदि आप माँ-बाप और बेटे को अपना समझेंगे; तो आप अपनी जरूरत के लिए उनको दुख नहीं देंगे।

'किसी का नहीं बनता तो न बन, अपना तो बन॥'

तुम पत्नी के न बनो; पिता के न बनो; पड़ौसी के न बनो; देश के न बनो; लेकिन, तुम अपने तो बनो। तुम अपने तो हो कि अपने भी नहीं हो ? यदि आप अपने हो, तो अपने को तो दु:ख नहीं देना चाहिए? आप अपने को तो दुखी नहीं करते होंगे ? आप करते हैं ? आप दुखी करना नहीं चाहते, यह अलग बात है; आप अपने को दुखी करते हो कि नहीं दो बातें हैं। आप अपने को दुखी नहीं करना चाहते, यह एक बात है। अपने को

दुखी करते रहते हो, यह दूसरी बात है। आप दुखी करना नहीं चाहते हैं कि दुखी करते भी नहीं हैं ? हमें मालूम है कि आप अपने को दुखी करते हैं। तुम्हारी तो क्या कहें, हम भी अपने को दुखी कर लेते हैं।

एक जगह तो ईमानदार रहो। यहीं ईमानदारी की जरूरत है। बाजार में तो जैसा हो, तैसा करना। यहाँ अपने लिए ईमानदार रहो, फिर इसके बाद अपने परिवार के लिए ईमानदार रहो। उसमें ज्यादा बढ़ो, तो अपने निकट वालों के लिए ईमानदार रहो। अपने पार्टनर के साथ ईमानदार रहो। उसके साथ धोखा न करो। जो तुम्हारे साथ धोखा करते हैं, उनको मत बख्शो। उनके साथ तुम भी धोखा करो।

मैं ईमानदारी का पक्षपाती हूँ; सद्भावना का पक्षपाती हूँ। परन्तु कभी-कभी ऐसी स्थिति भी आ जाती है कि घर की औरत भी हमें नाकों चने चबवा देती है। अन्त में, हम इतने मजबूर हो जाते हैं कि यह चाहने लगते हैं कि या तो वह मर जाए या हम मर जाएँ। जीवन में ऐसी स्थिति भी आ जाती है। ऐसी भी समस्याएँ आती हैं। भगवान् न करें, आपके साथ ऐसी समस्याएँ आएँ; पर, आ जाती हैं। जहाँ लड़कियों के और बहुओं के साथ अन्याय होता है, वहाँ ऐसी स्थिति आ जाती है। इसमें दो राय नहीं हैं।

आजकल की बहुएँ भी पता नहीं क्या बनकर आती हैं ? वे बहू बनकर तो आती ही नहीं हैं। वे तो घर की प्रधानमन्त्री बनकर आती हैं। कई बार ऐसी स्थिति आ जाती है कि यह निर्णय करना कठिन होता है कि क्या किया जाए? हर आदमी एक ही प्रकृति का नहीं होता। पर, बहू या पत्नी अपनी है, तो भरसक प्रयास किया जाए कि जलाने की नौबत ही न आए। लेकिन, मैं कहूँ या न कहूँ, बहुएँ जलाई जा रही हैं और जलाई जाती रहेंगी। तुम जलते रहे हो और जलते रहोगे। समाज की परिस्थितियाँ बड़ी जटिल हैं। सुलझाने की कोशिश करो। और कोशिश करनी ही चाहिए। परन्तु, जब घरों में जाकर देखते हैं, तो हमें स्वयं लगता है कि क्या करें? जब परिस्थितियाँ देखते हैं, तब हम भी नहीं समझ पाते कि उनको क्या बताएँ ?

हर आदमी एक ही प्रकृति का नहीं होता। पर, बहू या पत्नी अपनी है, तो भरसक प्रयास किया जाए कि जलाने की नौबत ही न आए। लेकिन, मैं कहूँ या न कहूँ, बहुएँ जलाई जा रही हैं और जलाई जाती रहेंगी। तुम जलते रहे हो और जलते रहोगे। समाज की परिस्थितियाँ बड़ी जटिल हैं। सुलझाने की कोशिश करो।

समय बड़ा विचित्र है। एक माँ ने अपने लड़के का ब्याह किया। माँ ने सोचा था कि बहू घर में आ जाएगी, तो उसे थोड़ा आराम मिलेगा। लेकिन, बहू के आने के बाद तो स्थिति ही बदल गई। पहले वह बेटे की चाय बनाती थी; अब उसे बहू की भी चाय बनानी पड़ती थी। पहले बेटे के ही कपड़े धोती थी; अब उसे बहू के भी कपड़े धोने पड़ते थे। पहले बेटे के ही बिस्तर बिछाती थी; अब उसे बहू के भी बिस्तर बिछाने पड़ते थे।

एक दिन बेटे और माँ ने सोचा कि ऐसा कब तक चलेगा ? कुछ तो करना ही चाहिए। मनुष्यता से मनुष्यता बढ़ती है; अच्छाई से अच्छाई बढ़ती है और बुराई से बुराई बढ़ती है। दोनों ने सोचा कि लड़ाई-झगड़े के बजाय कुछ ऐसा करें, जिससे बहू को सीख मिले। माँ

और बेटे ने आपस में सलाह की। बेटे ने कहा माँ! जब तुम झाड़ू लगाओगी, तब तुम्हारी झाड़ू पकड़कर मैं यह कहूँगा कि 'माँ तुम वृद्ध हो गई हो, तुम मत झाड़ो, मैं झाड़ता हूँ'।

माँ ने ऐसा ही किया। माँ झाड़ू को अपनी तरफ खींचती थी, बेटा अपनी तरफ खींचता था। माँ कहती थी 'मैं झाड़ती हूँ बेटा, मेरे रहते तू क्यों झाड़ेगा?' बेटा कहता था 'मैं जवान हूँ; तू बूढ़ी हो गई हो माँ; तू क्यों झाड़ेगी? मैं झाड़ता हूँ। वे सोचते थे कि ऐसा करने पर शायद बहू कहेगी कि वह झाड़ती है। लेकिन, बहू ने क्या कहा? बहू कहती है कि 'लड़ते काहे को हो; एक दिन तुम झाड़ लिया करो, एक दिन माँ झाड़ लिया करें'।

कई औरतें तो इतनी शैतान होती हैं कि उनका तो भगवान् ही मालिक होता है। सब तरह के लोग हैं और सब तरह की स्त्रियाँ भी हैं। एक पति, पत्नी के लिए गन्ना लेकर आया। आने में थोड़ी देर हो गई थी; इसलिए, पत्नी गुस्सा बैठी थी। आते ही उसने पति से गन्ना छीना और उसी से पति को मारा। जोर से मारा, तो गन्ना टूट गया। पति मुस्कराकर बोला, 'कोई बात नही; मुझे गन्ना तोड़ना नहीं पड़ा; आधा तू चूस ले और आधा मैं चूस लेता हूँ। जिन्दगी बड़ी विचित्र है। ऐसे भी लोग हैं, जो पत्नी द्वारा पीटे जाने पर भी प्रसन्न रहते हैं। ऐसी विचित्र स्त्रियां भी हैं, जो पति को भी पीट सकती हैं।

आध्यात्मिक जगत् में कौन कितनी उन्नति करता है, इसकी कोई सीमा नहीं है। सामाजिक और राजनैतिक रूप में आप कुछ भी हों पर व्यक्तिगत तौर पर तुम्हें महान् होना ही चाहिए। महानता का मतलब है कि आपका हृदय उदार हो, महान् हो। लेकिन, हमारे धर्म पर लोग लांछन भी लगाते हैं कि साधुओं ने धीरे-धीरे समाज को कायर और डरपोक बना दिया। पाप से डरते-डरते समाज इतना डरने लगा कि उसे साधारण सी बातें करने में भी पाप लगने लगा। कहीं चले गए, तो पाप लग गया; कुछ बोल दिया, तो पाप लग गया; रुपये छिपाने पड़े, तो पाप लग गया। इतना पाप लगने लगा कि आदमी के अन्दर पाप-ग्रन्थि ही बनने लगी। पाप-ग्रन्थि बनकर तुम्हें दुःख दे, उससे हम तुम्हें छुड़ाना चाहते हैं।

अर्जुन के भी पाप-ग्रन्थि थी। यदि वह युद्ध करेगा और अपने लोगों से लड़ेगा, तो उसे पाप लगेगा और वह नरक में चला जाएगा। भगवान् ने कहा 'अन्यायियों को मारने से पाप नहीं लगता; चाहे वे अपने ही क्यों न हों। तू डरता है कि तेरा कल्याण नहीं होगा और पाप लगेगा' भगवान् कहते हैं कि 'मैं तेरे लिए इसकी जिम्मेवारी लेता हूँ।' भगवान् कृष्ण ने कहा-

'अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्मामि मा शुचः ॥'

मैं तुझे मुक्त करूँगा। तू शोक मत कर।

'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥'

अर्जुन के भी पाप-ग्रन्थि थी। यदि वह युद्ध करेगा और अपने लोगों से लड़ेगा, तो उसे पाप लगेगा और वह नरक में चला जाएगा। भगवान् ने कहा 'अन्यायियों को मारने से पाप नहीं लगता; चाहे वे अपने ही क्यों न हों। तू डरता है कि तेरा कल्याण नहीं होगा और पाप लगेगा' भगवान् कहते हैं कि 'मैं तेरे लिए इसकी जिम्मेवारी लेता हूँ।'

'कई लोग कहते हैं कि भगवान् ने ऐसा क्यों कहा? क्यों करवाया पाप? जैनी लोग कहते हैं कि भगवान् ने जो यह पाप करवाया, उसके कारण वह अभी तक नरक में है। इसका मतलब यह नहीं है कि तुम जैनियों से लड़ो। उनका अपना चिन्तन है; सोचने का अपना ढंग है।

मैं यह कहता हूँ कि भगवान् कृष्ण जैसा समाज का शुभचिन्तक, उच्चनिष्ठा वाला व्यक्ति यदि नरक में होगा, तो फिर स्वर्ग कौन प्राप्त करेगा? जिनको जिन्दगी में नरक नहीं मिला; जिन्होंने सारा जीवन स्वर्ग की तरह जिया; विषम से विषम परिस्थितियों में भी जो मुस्कराते रहे और बंसी बजाते रहे; उनको नरक मिलेगा? मरने के बाद क्या होगा, हम लोग इस पर ज्यादा विचार नहीं करते। मरने के बाद सचखण्ड जाने की बात नहीं करते। जो जीते जी सचखण्ड में नहीं रहता, वह मरकर भी वहाँ नहीं जाता। जो जीते जी स्वर्ग में निवास नहीं करता; वह मरकर भी स्वर्ग प्राप्त नहीं करता। अभी जिन्दगी है और अभी अकल है; यदि, तुम अभी स्वर्ग का अनुभव नहीं करते; यदि, हम अभी आनन्द का अनुभव नहीं करते; तो फिर मरने के बाद भी नहीं कर सकते। यदि, अभी भी पाप और पुण्य की ग्रन्थियों में पड़े हुए हैं; तो यह पाप ग्रन्थियाँ दिमाग से निकालनी ही चाहिए। यह जानना चाहिए कि तुम कौन हो? मेरा अभिप्राय यह है कि आत्मा के बिना जाने, पाप और पुण्य से छुटकारा नहीं होता।

पाप और पुण्य से ऊपर उठाने वाला यदि कुछ है, तो वह आत्मा का अनुभव ही है। नहीं तो सदैव ही कुछ न कुछ लगा ही रहेगा। थोड़ा पुण्य कर लोगे, तो बड़े पुण्यात्मा बन जाओगे। थोड़ी-सी गलती हो जाएगी, तो बड़े पापी बन जाओगे। सुख और दुःख के द्वन्द्व में ही फँसे रहोगे। सुख और दुःख के, पाप और पुण्य के, जन्म और मृत्यु के द्वन्द्व से कभी भी छुटकारा नहीं मिलेगा। सत्य को जानकर ही, उनसे छुटकारा पाया जा सकता है; उनसे पार पाया जा सकता है। बिना ज्ञान के; जन्म और मौत के कैसे पार जाओगे ?

तुम कभी पाप से डरते हो, कभी नरक से डरते हो। तुम स्वर्ग पाना चाहते हो। असल में तुम जन्म और मृत्यु, लाभ और हानि के चक्कर में ही पड़े हुए हो। लेकिन, जो अपने-आप में सन्तुष्ट है; अपनी आत्मा में आराम कर रहा है; वह इनसे मुक्त है। मिट्टी, घड़ा बनने पर खुश हो और घड़ा टूटने पर दुःख माने; पर, जो मिट्टी अपने आप में सन्तुष्ट है; उसके लिए घड़ा रहे या न रहे, कोई फर्क नहीं पड़ता।

आत्मवान् के लिए कहा गया है कि वह योगक्षेम से पार हो जाता है। भगवान् भक्तों का और ज्ञानी का योगक्षेम वहन करते हैं।

'निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥'

वह योग और क्षेम की जरूरत ही नहीं समझता कि उसका योग हो और क्षेम हो ? आत्मनिष्ठ पुरुष चिन्ता ही नहीं करते।

मुझे एक छोटी-सी कहानी याद आ रही है। एक विद्यालय में अध्यापक ने बच्चों से पूछा कि बच्चो! तुममें से स्वर्ग कौन-कौन जाना चाहता है? तमाम बच्चों ने हाथ उठा दिये। आप लोगों से पुछूँ, तो आप सब लोग भी मोक्ष के लिए तैयार हो जाओगे। केवल एक बच्चे ने हाथ नहीं उठाया। अध्यापक ने उससे पूछा कि बेटा-तुम नरक में जाना चाहते हो, तो हाथ उठाओ। उसने हाथ नहीं उठाया। उन्होंने सोचा था कि शायद वह नरक में जाना चाहता है। अध्यापक ने पूछा-फिर कहाँ जाना चाहते हो? उसने कहा, 'जब मैं पढ़ने आ रहा था, तो मम्मी ने कहा था कि और कहीं नहीं जाना; पढ़ने के बाद सीधे घर आना'।

यह बात तो बड़ी छोटी-सी है; लेकिन, बड़े महत्त्व

की है। हम तुमको स्वर्ग नहीं भेजना चाहते; हम तुमसे नरक में जाने की बात भी नहीं करते। तुमसे जन्म मृत्यु की बात नहीं करते। हम उस सत्य की बात करते हैं, जहाँ न जन्म है, न मृत्यु है। सत्य में न जन्म है, न मृत्यु है। घड़े का जन्म और उसकी मृत्यु है; लेकिन, मिट्टी का न तो जन्म ही है और न मृत्यु ही है। सोने का भी जन्म और मृत्यु नहीं है; पर, गहने का जन्म भी है और मृत्यु भी है।

सत्य का जन्म और सत्य की मृत्यु होती ही नहीं है। सत्य अजन्मा है और अविनाशी है। वह अनादि और अनन्त है। तुम सत्य हो; तुम चैतन्य हो; इसलिए, तुम्हारा जन्म और मरण नहीं होगा। यह तो जन्म और मरण का ख्याल तुम्हारी खोपड़ी को पकड़े हुए है; वह बिना आत्मज्ञान के निवृत नहीं हो सकता। आत्म-दृष्टि से ही तुम सुख और दु:ख से रहित हो सकते हो। आत्म-दृष्टि से ही जन्म और मृत्यु से रहित हो सकते हो और कोई तरीका नहीं है।

घड़े को मिट्टी-दृष्टि के अलावा कौन मरने से बचा लेगा? और कोई उपाय नहीं है। घड़े को कितना ही मजबूत बनाया जाए, फिर भी वह अमर नहीं हो सकता। वैसे, घड़े को कितना ही मजबूत बना लो; यदि, वह अमर है, तो सत्य की दृष्टि से ही है; घड़े की दृष्टि से नहीं है। घड़े की दृष्टि से तो, न वह अमर है और न ही अमर किया जा सकता है। तुम्हें कोई गुरू या महात्मा भी अमर नहीं कर सकते। कोई तप या योग भी अमर नहीं कर सकता? इस काम में अध्यात्म भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। संयम और आचार भी तुम्हें अमर नहीं करेगा। तुम आत्म-दृष्टि से ही अमर हो सकोगे।

सन्त दृष्टि ही बदलते हैं; सृष्टि नहीं। दृष्टि बदल गई, तो बात ही बदल गई।

'नजरें बदल गई, तो नजारे बदल गए।
किश्ती का रूख बदला, तो किनारे बदल गए॥'

इसलिए, दृष्टि ही बदलनी है। तुम कौन हो? यदि, तुम आदमी हो; तुम्हें हम कब तक मरने से बचाएँगे? आदमी मानकर मरने की दृष्टि है और आदमी मानकर ही जन्म की दृष्टि है। आदमी मानकर ही तेरे-मेरे की दृष्टि है। इसलिए, तुम भय और चिन्ता से ग्रस्त हो।

हम तुमको स्वर्ग नहीं भेजना चाहते; हम तुमसे नरक में जाने की बात भी नहीं करते। तुमसे जन्म मृत्यु की बात नहीं करते। हम उस सत्य की बात करते हैं, जहाँ न जन्म है, न मृत्यु है।

जब भय सताए, तो शरीर को बचाओ। हम नहीं कहते कि शरीर को न बचाओ; पर, आत्म-दृष्टि करो। आत्म-दृष्टि तुम्हें मौत में भी न मरने देगी। यदि घड़े को कोई तोड़ने आवे, तो घड़ा मिट्टी को अपना अस्तित्व स्वीकार करके मजबूत हो जाए। मान लो कोई तुम्हें मारने आ जाए; काल आ जाए और मारने ही लगे; तो उस समय तुम क्या मानकर अभय होगे ? बस, तुम्हारी सत्य-दृष्टि ही तुम्हें अभय कर सकती है और कोई तरीका ही नहीं है।

सत्य दृष्टि से तात्पर्य है कि तुम थे, तुम हो और तुम रहोगे। यही सत्य है। सत्य कह दो, चाहे अविनाशी कह दो; बात एक ही है। जो था, जो है और जो आगे भी रहेगा; उसी का नाम सत्य हो, तो फिर मौत के समय

उसी का स्मरण करो; तुम्हारी मौत नहीं होगी। यदि, तुम्हारा बनावट की तरफ ध्यान है; तो तुम्हारी मौत निश्चित है; भगवान् भी तुम्हें नहीं बचा सकते।

भगवान् क्या कर देंगे, जो तुम्हें बचा लेंगे ? यदि तुम सत्य हो, तो तुम्हें भगवान् भी नहीं मिटा सकते। क्यों इधर-उधर गिड़गिड़ाते फिरते हो ? अज्ञानी ही सबके दरवाजे खटखटाता फिरता है। ज्ञानी किसी का दरवाजा नहीं खटखटाता। वह दीन नहीं होता। आत्मज्ञान ही दीनता और दरिद्रता का नाश करता है; लेकिन, मरने के बाद नहीं करता। घड़े के टूट जाने के बाद वह नहीं कहता कि तुम अमर हो जाओगे। वह घड़े से कहता है कि 'तू मिट्टी है'; तू घड़ा रहते मिट्टी है; घड़ा रहने के बाद भी मिट्टी है। इसलिए, तू सत्य है। अभी और कभी भी, तू मरता ही नहीं है। यह नहीं कि जब मर जाएगा, तब तू मिट्टी में पहुँचेगा। कोई पहुँचा देगा। अभी तो जिन्दगी में नहीं पहुँच सकते।

यदि तुम अभी सत्य हो, तो ही हो। यदि तुम अभी सत्य नहीं हो, तो हो भी नहीं सकते। अभी तुम चैतन्य हो; अभी तुम ब्रह्म हो। जिन्होंने इस सत्य को जाना है, उन्होंने जिन्दगी में ही कहा है कि 'मै' ब्रह्म हूँ। ब्रह्मज्ञानी, जीते जी ही परमेश्वर होते हैं।

'ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर।'

क्या ब्रह्मज्ञानी मरने के बाद परमेश्वर हो सकता है? नहीं हो सकता। क्या तुम मरने के बाद परमेश्वर हो जाओगे? नहीं हो पाओगे। गुरू तो जीते जी परमेश्वर है; तुम मरने के बाद हो जाओगे ? क्या ऊपर बैठने वाले सन्त जिन्दगी में ही ब्रह्म हो जाते हैं? क्या नीचे बैठने वाले, मरने के बाद ब्रह्म होंगे? क्या यह ठीक है? लाल कपड़े वाले पहले ब्रह्म हो जाते हैं? क्या सफेद कपड़े वाले बाद में होते हैं? यह सब क्या है? ऊँचे और नीचे बैठने से, लाल और सफेद कपड़ों से, ब्रह्मा होने में कोई फर्क नहीं पड़ता। जो जानेगा, वही ब्रह्मा हो सकता है।

'सोई जाने जिन्ह देव जनाई,
जानत तुमहि, तुमहि होइ जाई।'

आत्मा को जानो, आप पुण्यात्मा हो, भाग्यशाली हो; भगवान् करे ये वचन आपके दिल में बैठ जाएँ और आपको सब कुछ करने की हिम्मत दें। वेदान्त बहादुर बनाता है। वेदान्त मर जाने की भी हिम्मत देता है। क्योंकि, तुम मरते नहीं हो; इसलिए, अभिनेता मरने का नाटक खुशी से खेलता है। क्यों? क्योंकि, वह मरता नहीं है। जिस दिन तुम यह जान जाओगे, मरने से नहीं डरोगे। जिस दिन मिट्टी यह जानेगी कि वह मरती नहीं है; उस दिन घड़ा बनके मर जाने में भी वह मरने से नहीं डरेगी। क्योंकि, बनना और मिटना मिट्टी का खेल है। सोने का खेल है गहना बनना और टूटना।

ऐसे ही, सत्य के लिए संसार खेल है। जिन्होंने सत्य को जाना या जिन्होंने अपने को सत्य जाना; उनके लिए संसार में बनना-मिटना सब अभिनय है; सब खेल है और सब लीला है। सत्य के जानने वाले; अपनी

यदि तुम अभी सत्य हो, तो ही हो। यदि तुम अभी सत्य नहीं हो, तो हो भी नहीं सकते। अभी तुम चैतन्य हो; अभी तुम ब्रह्म हो। जिन्होंने इस सत्य को जाना है, उन्होंने जिन्दगी में ही कहा है कि 'मै' ब्रह्म हूँ। ब्रह्मज्ञानी, जीते जी ही परमेश्वर होते हैं।

आत्मा को सत्य रूप से अनुभव कर लेने वाले; ज्ञानियों के लिए संसार खेल है। सत्य को, मिट्टी को भुला करके, जो घड़ा जीता है; वह मर रहा है। वह जी नहीं रहा; मरने के दिन पूरे कर रहा है। यदि सत्य को भूला, तो मरा और सत्य को जाना, तो अमर है। अन्य कोई अमरता नहीं है। इसलिए, ज्ञान के सिवा अभय और अमर करने वाला कोई नहीं है। ज्ञान ही पवित्र है।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'

भगवान् कृष्ण ने कहा है-

''अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः
सर्व ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि॥''

यदि तू पापियों में सबसे बड़ा पापी है; यदि तू पापियों का सरदार है; तो भी तू ज्ञान की नांव में बैठ जा; तू पार हो जाएगा। तू ज्ञान से ही मुक्त हो जाएगा। तू ज्ञान प्राप्त न करके, कितने ही पुण्य कर ले; सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर ले; तू सम्पूर्ण यज्ञ कर ले; तू भजन-पूजन, गंगा-स्नान और तीर्थ सब कुछ कर ले; लेकिन, इन सबसे जो कुछ फल मिलेगा, उससे तेरी मुक्ति नहीं होगी।

यदि, तू सत्य को जान ले, तो तू अभी ही मुक्त हो जाएगा। इसलिए दुनियां के पुण्य एक तरफ हैं और परमात्मा का ज्ञान एक तरफ है। तुम्हारी समझ में आ जाए, तो समझो। यदि तुम्हारी समझ में न आए, तो जो अच्छा लगे वह करो। आप पर कोई दबाव नहीं है। लेकिन, हमने गुरूओं से समझा है कि कोई अन्य रास्ता नहीं है। अर्जुन बड़ा पुण्यात्मा था। पाप करने से डरता था। बड़ा आदमी था; पर, कायर और कमजोर था। वही अर्जुन गीता सुनने के बाद भगवान् से कहता है कि 'आप जो कहें सो मैं करूँ।'

'स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।'

अब आप जो कहेंगे, मैं करूँगा। पहले मैं यह चाहता था कि 'जो मैं चाहूँ, वह तुम करो। अब ज्ञान हो गया है, तो जो तुम कहो, वह मैं करने को तैयार हूँ। चाहे लड़वा दो और चाहे संन्यास दे दो। दोनों को मैं राजी हूँ।'

'राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।
यहाँ यूँ भी वाह-वाह है वहाँ वूँ भी वाह-वाह है॥'

मुझे निर्धन बनाओगे, तो उसके लिए भी तैयार हूँ। धनवान बनाते हो, तो कर दूँगा सेवा; लगा दूँगा उस धन को कहीं। नहीं तो, दो रोटी तो मिलती ही मिलती हैं। उनको कौन छीनता है? यदि वे भी छीन लोगे; तो माँगकर खा लूँगा। यदि, माँगने पर भी नहीं मिलेगी; तो कभी न कभी तो मरना ही है। आज ही मर लेंगे। इससे ज्यादा और क्या होगा? इससे ज्यादा क्या कर लोगे?

इतना ही तो होता है। वह तो होना ही है। इसलिए, एक बार दुनियां भर का विचार कर लो; इससे ज्यादा होता नहीं; इससे कम होने वाला नहीं है। इससे कम होने वाला नहीं है और इससे ज्यादा भी होने वाला नहीं है। कोई नाराज हो जाएगा,तो इससे ज्यादा क्या करेगा? बताओ ? और सब खुश हो जाएँ, हम भी खुश हो जाएँ, भगवान् भी खुश हो जाएँ, तो यह तो होने वाला नहीं है। यह जो दिख रहा है, यह तो होना ही होना है। तुम उसे देख लो; तो यह होना सब व्यर्थ हो जाता है। यह होना खेल हो जाएगा। इसलिए, सत्य को जानने के सिवाय, हृदय को शान्ति देने वाला, सन्तोष देने वाला और कुछ नहीं है।

हम वेदान्त सम्मेलन क्यों करवाते हैं? इसका मतलब यह है कि हमारी निष्ठा में वेदान्त सर्वोपरि है। किन्तु, मनुष्यता बेच नहीं देनी है। अरे ! जब संसारी लोग अच्छा व्यवहार कर लेते हैं; धूर्त लोग भी अपने परिवार से अच्छा व्यवहार करते हैं; जीव जन्तु और जानवर भी अपने अपने परिवार के प्रति हमदर्दी रखते हैं; बच्चों को दूध पिलाते हैं; खिलाते हैं और पालते हैं;

तो तुम पालते हो, तो कौन-सी बड़ी बात है? तुम्हें पालना ही चाहिए। यह तो अच्छी बात है ही। यह तो करो ही।

परन्तु, चिड़ियों के बच्चों को भी बाज खा जाता है। पशुओं के बच्चों को भी हिंसक जानवर खा जाते हैं। बिल्ली के बच्चों को भी बिलौटे उठा ले जाते हैं। यह सब कुछ होता रहा है। पौधों के फल भी झड़ जाते हैं। वे बिना पके, कच्चे ही गिर जाते हैं। संसार है, यह तो परिवर्तनशील है। इस सत्य को स्वीकार करो। जहाँ आत्मा की सत्यता को स्वीकार करते हो, वहाँ जगत् के इस नियम को भी स्वीकार करो कि जो जन्मा है, वह मरेगा ही। जो यहाँ आया है, वह जाएगा ही। जो आज मिला है, वह कल बिछुड़ेगा ही। जो यहाँ है, वह रहने वाला नहीं है; जो रहने वाला है, उसकी याद करो। रहने वाले की याद करोगे, तो न रहने वाले का आनन्द से तमाशा देखोगे। यदि, रहने वाले को भूल गए, तो न रहने वालों में उलझ जाओगे।

केवल सत्य का ज्ञान प्राप्त करो। इसलिए कि न रहने वालों का तमाशा, और आनन्द से देख सको। तुम आनन्द से और मस्ती से जी सको। वेदान्त इसलिए नहीं है कि एक और जिम्मेदारी लेकर तुम कुढ़ने लगो। तुम दुखी हो जाओ और ब्लडप्रेशर बढ़ जाए; क्योंकि, क्या बताएँ, अभी तो क्रोध ही नहीं छूटा है। अभी तो दुःख होता है। अभी तो घर की थोड़ी चिन्ता भी होती है। वेदान्त ब्लडप्रेशर बढ़ाने के लिए नहीं है। जैसे शरीर में बुढ़ापा आ जाता है, ऐसे ही मन में थोड़ी चिन्ता आ गई है। ये कबूतर खाना है। मन कबूतरखाना है। तुम उससे भी परे कोई चीज हो। तुम अपने को जानो। तुम इस कबूतरखाने को कब तक ठीक रखोगे ?

इस बात को गहराई से जानो कि जो सत्य है, वही शुद्ध है और सत्य का स्मरण करना ही शुद्धता है। सत्य को भूल जाना ही अन्याय है; पाप है और अनाचार है। सत्य को भूले, तो पुण्यात्मा भी पापी हैं। सत्य को जब तक भूले हो, तब तक पुण्य करना भी निकृष्ट पाप है। छोटा पाप है। बड़ा तो नहीं कह सकते; पर, छोटा पाप अवश्य ही है। तुम पूरे निष्पाप नहीं हो। क्योंकि, पुण्य करना भी जन्म देने वाला, बन्धन करने वाला और सुख से बँधने वाला है। आत्मा को भूले, तो कुछ न कुछ पाप और कुछ-न-कुछ भय रहेगा ही।

जितनी देर आत्मनिष्ठ रहो, पूरी निष्ठा से रहो। अच्छे से अच्छा पुत्र भी चिन्ता ही देगा। अच्छे से अच्छा शरीर भी चिन्ता ही देगा। पशुओं के शरीर कम चिन्ता देते हैं। आदमी का शरीर मिला है, तो चिन्ता और बढ़ गई है। इसलिए, यदि पशु होते, तो वेदान्त न सुनते तो भी काम चल जाता। परन्तु, आदमी के जीवन में तो बहुत चिन्ताएँ हैं। यदि वेदान्त नहीं सुनोगे, तो फिर कोई रास्ता मिलने वाला नहीं है।

''भई परापति मानुख देहुरिआ।

गोबिंद मिलण की इह तेरी बिरिआ॥''

तुझे यह मानव शरीर प्राप्त हुआ है। तेरे लिए भगवान् से मिलने का यही समय है।

'जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले॥'

परमात्मा की ओर आत्मा की स्मृति करो। क्योंकि, मानव जीवन में बुद्धि ज्यादा होने से, व्यक्ति ज्यादा जिम्मेदारी समझता है। यदि, आप आत्मा को नहीं जानेंगे; सत्य को नहीं जानेंगे; तो मौत की चिन्ता, वियोग की चिन्ता आपको सदा सताती रहेगी। पशुओं को चिन्ता नहीं सताती। इसलिए या तो हम पशु हो जाएँ और यदि आदमी हुए हैं, तो आत्मज्ञ हो जाएँ; अन्यथा उद्धार का और कोई रास्ता नहीं है।

"परम ज्योति" क्यों ?

–पूज्यश्री संत सुभाष शास्त्री जी महाराज

ॐ अग्निर्ज्योतिज्योर्तिरग्नि: स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा।
अग्निवर्चोज्योतिर्वर्च: स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्च: स्वाहा।

माताओ, बहिनों एवं प्रिय सज्जनों ! यह आध्यात्मिक मासिक पत्रिका "परमज्योति" का श्री गणेश करने जा रहे हैं। परम प्रभु की सृष्टि में उस "परमज्योति" का श्री गणेश करने जा रहे हैं। परम प्रभु की सृष्टि में उस "परमज्योति" से अनेक ज्योतियां हैं जैसे ब्रह्म ज्योति, चेतन ज्योति, निरंजन ज्योति, ज्ञान ज्योति, आत्म-परमात्म ज्योति, दीपज्योति आदि।

बाहिर के अन्धकार को दूर करने के लिए दीपक की आवश्यकता होती है और भीतर के अज्ञान रूपी अन्धकार के निवारण के लिए गुरुज्ञान रूपी दीपक की आवश्यकता पड़ती है।

दीपावली के दिन पत्रिका का शुभारम्भ :

दीपावली की काली अन्धेरी रात्रि को प्रकाश किया जाता है, अन्धेरे को भगाया जाता है, दीप पूजा होती है। हमारे जितने भी धार्मिक कृत्य होते हैं दीप प्रज्जवलत करके ही किये जाते हैं। ऐसे ही मन के अन्धेरे को दूर करने के लिए सन्त सद्गुरू और प्रभु के अवतार हुआ करते हैं।

दीपावली के ही दिन हमारे पूज्य सद्गुरू देव अनन्त श्री विभूषित युग पुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज का अवतरण हुआ जो आज लाखों करोड़ों लोगों के मन से अज्ञान रूपी, भ्रम रूपी अन्धकार को दूर कर रहे हैं। इनके शुभ नाम 'परम' अक्षर से हम ने 10 नाम लिखे तो भारत सरकार पत्रिका विभाग वालों ने "परमज्योति" पत्रिका हेतू स्वीकृति दे दी। अपनी सरकार के हम बहुत आभारी हैं धन्यवाद और आशीर्वाद देते हैं।

पत्रिका प्रकाशित करने का उद्देश्य :

वैसे तो हमारे गुरुदेव जी के आश्रम से "युग निर्झर" मासिक पत्रिका निकलती है, जो बहुत ही जीवनोपयोगी है उसकी तुलना में तो यह सूर्य को दीपक दिखाने वाली ही बात होगी। मजबूरी में इसे प्रकाशित करवाना पड़ रहा है।

गुरु कृपा से जब सत्संग, भागवत कथा, साधना शिविर या भण्डारा करते हैं तो साधारण कार्ड पर दो रुपये का टिकट लगाना पड़ता है। यदि पांच हज़ार, शिष्यों को सूचित करना हो तो दस हज़ार रुपये डाक खर्च देना पड़ता है। असमर्थता के कारण बहुत से श्रद्धालुओं को इस लाभ से वंचित होना पड़ता था।

अब पत्रिका के माध्यम से हम गुरुओं, ऋषियों, सन्तों के विचार, अपना सन्देश, ध्यान योगासन की विधियां एवं लाभ तथा वर्ष मास के पर्व, त्यौहार, व्रत आदि की जानकारी भी दे सकेंगे।

यह पत्रिका सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय होगी। देश के हर जाति वर्ग के लोग इस से लाभान्वित होंगे। सन्त सब के हित और सब के सुख की ही शुभ कामना करते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदद्:ख भागभवेत्॥

–वेद

नानक नाम चड़दी कला, तेरे भाणे सर्वत दा भला।

–गुरूवाणी

सभी सुखी हों, सभी निरोग्य हों, सभी कल्याण को देखें, किसी को कोई भी दुःख न हो। चारों ओर शान्ति हो। हम धर्म पर चलें आपसी प्रेम भाईचारा हो हमारा देश, राष्ट्र उन्नति करें। ऐसी हमारी सभी की भावना हो।

विवेक ज्योति कैसे जागृत हुई?

लगभग 10-12 वर्ष गुरु देव के श्री चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। महाराज श्री जी के हजारों शिष्य आत्मज्ञानी, वीतराग, तपस्वी साधक सिद्ध एवं सद्गृहस्थ हैं इन में श्री चरणों की रज का कण यह दास भी है, विशेष नाम पूज्य साध्वी ऋतम्भरा बहिन जी का लगभग पूरे देश में विख्यात है। इनका पूर्व शुभ नाम ज्योति था, परम श्री गुरुदेव जी ने साधना करते देख इनको ऋतम्भरा शक्ति प्रदान की।

दया के सागर, प्रेम के सागर, ज्ञान के भण्डार श्री चरणों में हमने भी झोली फैला दी, मेरे में पात्रता तो थी नहीं फिर भी परम कृपालु प्रभु ने मेरे सिर पर हाथ रखा और हृदय में ''परमज्योति'' जला दी, आत्मसाक्षात्कार करवा दिया। एक दारिद्रय को मालामाल कर दिया जैसे श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अमृत शका कर दया राम से दयासिंह, धर्मचन्द से धर्म सिंह बनाया। ऐसे ही मेरे गुरु देव ने ज्ञानामृत पिला कर मुझे असंत से संत सुभाष शास्त्री बना दिया। मैं सदैव उनका ऋणी हूँ।

वे ज्ञान के भण्डार और झोली हमारी छोटी थी, जितना भरा वे सत्संग एवं इस पत्रिका के माध्यम से गुरु प्रसाद आप तक भी पहुंचाने का प्रयास है। जैसे कोई गंगा स्नान करने जाए तो कुछ जल वह यात्री साथ भी लाता है, जो श्रद्धा से हाथ आगे करता है उसे मिलता है।

''परमज्योति'' पत्रिका के नामकरण में मां जगत जननी आदि शक्ति की प्रेरणा की झलक भी स्पष्ट दिखाई देती है। जब हम गुरु आज्ञा से जम्मू विलावर क्षेत्र में स्थित मां सुकराला देवी (जोकि मां दुर्गा का ही एक रूप हैं) मंदिर में, जोकि जंगल में है, एक वर्ष के मौन अनुष्ठान में थे, तब मुझे भगवती की कृपा से ''परमज्योति'' के प्रत्यक्ष दर्शन हुए थे। इस से सिद्ध होता है के मेरी अम्बा को शायद यही नाम पत्रिका हेतु स्वीकार था।

सच्चाई तो यही है कि सारा संसार एक ''परमज्योति'' का ही खेल है सृष्टि का आदि, मध्य और अन्त खोजा जाए तो एक ज्योति के सिवाय और कुछ भी नहीं है। जैसे एक सिनेमा के पर्दे या टी०वी० पर जो कुछ भी दिखाई देता है वह एक विद्युत ज्योति पावर ज्योति के कारण ही सब कुछ दिखाई देता है। यदि बिजली न हो तो कुछ भी दिखाई नहीं देता। पर्दे पर जब कोई दृश्य नहीं था बिजली थी दृश्य है बिजली है और जब दृश्य नहीं है बिजली तब भी है।

यह बिजली मानव द्वारा बनाई हुई आती जाती रहती है। मगर हम जिस बिजली की बात कर रहे हैं वह आने जाने वाली नहीं वह सदा ज्यूं की त्यूं ही रहती है। सूर्य, चन्द्र, ग्रह-नक्षत्र, तारे संसार को वही प्रकाशित करती है। आपके घर में ट्यूब बल्व, पंखा इत्यादि को एक ही पावर हाऊस से बिजली मिलती है। इसी तरह दुनियां का सबसे बड़ा जो पावर हाऊस है वह ''परम ज्योति'' ही है।

दीप अन्धकार निवारण का प्रतीक :

दीपक हमें प्रकाश देता है। प्रकाश हमें प्रिय है अतः हम उसकी पूजा करते हैं

ॐ भो दीप! ब्रह्मरूपस्त्वअन्धकार निवारक।
इमा मया कृता पूजा गृहन्ते जो विवर्धय॥

सायंकाल-दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु में पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तुते॥

यह नियम है यहां प्रकाश होगा वहां अन्धकार नहीं होगा। कहते हैं कि

अन्धकार है वहां यहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश यहां साहित्य नहीं है॥

बाहिर के अन्धकार को दूर करने के लिए बाह्य प्रकाश की आवश्यकता है भीतर (मन) के अन्धेरे को दूर करने के लिए साहित्य, गुरू ज्ञान, प्रभु नाम की आवश्यकता है।

बिना ज्ञानी गुरू के मन का अन्धकार दूर नहीं होगा।

जो सौ चन्दा उगवे, सूरज चढ़े हजार।
एते चांदन होइयां, गुरू बिन घोर अन्धकार॥
गुरू बिन घोर अन्धकार, गुरू बिन समझ न आवै।
गुरू बिन सुरत न सिद्ध, गुरू बिन मुक्ति न पावै॥

– गुरुवाणी

रामायण में सन्त तुलसी दास जी ने भी बहुत सुन्दर लिखा है–

राम नाम मनि दीप धरू, जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर वाहेरहुं, जौं चाहसि उजिआर॥

तुलसी दास जी कहते हैं कि जो भीतर और बाहर उजाला चाहते हो तो राम-नाम रूपी मणि दीपक को मुखरूपी द्वार की जीभ रुपी देहली पर धरो।

ज्योति ही जीवन है। जीवन में प्रेम का दीपक जलना ही चाहिये, बुझे हुए दीपक को कोई नमस्कार नहीं करता। जो अन्धेरे में काम आये वही दीप है। ध्यान रखना कार्य से पूर्व ही कहीं दीप टूट न जाए, उसका तेल बिखर न जाये। हवा का झोंका न लग जाए। सावधान!

दीपावली को एक सेठ ने नौकर को महल की दीवारों पर दीपमाला जलाने को कहा, दीप जलने लगे। दो-तीन दीपक नौकर की असावधानी के कारण छत्त से नीचे गिर कर टूट गए। सेठ जी नौकर को डांटने लगे। प्रात: काल कौओं ने बहुत से दीपक नीचे गिराना शुरू कर दिये सेठ जी भी देख रहे थे। नौकर बोला। साहिब मेरे से दो-तीन दीपक टूटे थे आप बहुत नाराज हुए, अब आपके सामने सभी दीपक नीचे गिर रहे हैं आप कुछ नहीं बोल रहे? सेठ जी ने कहा! अब इनका कोई महत्व नहीं है, यह जल चुके हैं, किन्तु तुम्हारे से जो दीपक टूटे उनका दु:ख इस लिए है कि उनको तो अभी जलना था।

कहने का भाव कि शरीर भी एक दीपक है। इसमें आयु रूपी बत्ती है और स्वास रूपी तेल है। जब तक तेल बत्ती है तभी तक यह रोशनी देगा। हे जीव ! दीपक का धर्म प्रकाश देना है, तू चाहे इसकी लाईट में गीता पढ़ या ताश खेल, पाप कर या पुण्य यह तेरी मर्जी है। दीपक पक्षपात नहीं करता। तेरा अखण्ड पाठ पूरा हो जाये फिर दीपक बुझे तो कोई दु:ख नहीं। ऐसे ही हे प्राणी! तू संसार में जिस कार्य से आया है शरीर रहते वह पूरा हो जाए। मौत का झोंका जाने कब इसे बुझा दे।

जगत में जितने भी दीपक (दीये) हैं वह तेल बत्ती इन्धन आदि से जलते हैं और बुझते हैं।एक विलक्षण (दीया) दीप ऐसा भी है जो बिना किसी के सहारे जलता है और जलता ही रहता है। उसे हवा, पानी, मिट्टी या शस्त्र आदि किसी से भी बुझाया नहीं जा सकता वह है शाश्वत ज्योति, ''परमज्योति'' आत्मज्योति।

हौं वासी उस देश के यहां पारब्रह्म का खेल।
दीआ जले ऊगम का बिन वाती बिन तेल॥

–कबीर साहिब

वह दीआ हीरे की भांति (तरह) स्वयं प्रकाश है। हीरे से भी क्या तुलना करें हीरा तो जड़ और नाशवान है, किन्तु वह अविनाशी और चेतन ज्योति है। यही

ज्योति सृष्टि के पहले थी, अब भी है और आगे भी यह सत्य ज्योति ही रहेगी।

गुरू वाणी में इसको–आदि सच्च जुगादि सच्च नानक होसी भी सच्च कहा है।

इसी को मानकर पहिचानना ज्ञान है या ज्यूं कहे कि सभी का ज्ञान इसी "परमज्योति" से होता है। इस की ही याद में सुख और इसी को भूलने से सारे दु:ख हैं। सच्च तो यह कि मानव तन इसी का साक्षात्कार करने के लिए मिला है और किसी भी देह (जन्म) में इसे नहीं जान सकते। मानव का तन हो, मोक्ष की इच्छा हो एवं सन्त कृपा हो तो बेड़ा पार हो जाता है। इस समय मानव तन में सुलभ हो सकता है और यदि मनुष्य शरीर पाकर किसी संयोगजन्य सुख में ही जीवन लगा दिया तो सिवाय पछताने के कुछ हाथ लगने वाला नहीं है।

सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनि धूनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि, मिथ्या दोस लगाइ॥
–रामायण

वह परलोक में दु:ख पाता है और काल, कर्म व ईश्वर को झूठा दोष लगाकर सिर पीट-पीट कर पछताता है।

सूर्य, चन्द्र प्रकाश (रोशनी) देते हैं और गुरू ज्ञान की रोशनी। किन्तु कुछ जीव ऐसे भी हैं जिनको रोशनी अच्छी नहीं लगती। जैसे उल्लू, चमगादड़, चोर आदि–
चोरहि चंदिनि राति न भावा॥
चोर को चांदनी रात अच्छी नहीं लगती।
और जिन को अच्छी नहीं लगती उन्हें उल्लूं या निशाचर ही समझना चाहिये। उनको तो प्राकृतिक मजबूरी है पर हे मानव! तू –अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की एवं मृत्यु से अमृत की ओर चल। ऐसी वेद भगवान् की आज्ञा है।

एक आदमी अन्धेरे कमरे में मेज, कुर्सी, चारपाई आदि कमरे में रखी चीजों से टकराता और दु:खी होता रहता। मन में आया या तो मैं भाग जाऊं या सामान बाहिर फैंक दूं। किसी सज्जन ने कहा न भागने की जरूरत है और न ही सामान फैंकने की, तू केवल रोशनी का प्रबन्ध कर ले परेशानी खत्म। ऐसे ही हम कभी काम से, क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार, ईर्ष्या द्वेष से टकराते हैं, तो दु:खी होते रहते हैं। अरे, सन्तो की बात मान कर एक बार विवेक का अन्त:करण में दीपक जलाले सुखी हो जाएगा। तेरा कल्याण हो जाएगा। पर बिना सत्संग के यह दीप जलेगा नहीं–

बिनु सतसंग न हरि कथा, तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गए बिनु राम पद, होइ न दृढ़ अनुराग॥

सत्संग के बिना हरि: कथा नहीं मिलती, बिना कथा के मोह नहीं भागता और मोह के दूर हुए बिना श्रीराम जी के चरणों में स्नेह नहीं होता।

आप मोह रूपी नींद से जाग जाएं, स्वप्नों से सत्य में स्थित हो जाये उसी के लिए यह हमारा प्रयास है। आपको लम्बी यात्रा अन्धेरी रात्रि में करना पड़ जाए और आपकी गाड़ी की लाईट न हो तो आप मंजिल पर सुरक्षित नहीं पहुंच पाओगे। प्रकाश जरूरी है।

प्रत्येक शुभ अवसर, मांगलिक कार्यों का शुभारंभ दीप प्रज्जवलित कर उसी की साक्षी में किया जाता है। प्रकाश सुखद अभिव्यक्ति की सर्वोच्च स्थिति है। ज्योति जीवन है और पूर्ण अन्धकार का नाम मृत्यु है। सूर्य की सत्ता अन्धकार का हनन है। भारतवासी उषा वेला में उठकर उदित होते हुए सूर्य का दर्शन कर स्वयं को कृतार्थ मानते हैं।

सूर्य और चांद भी ज्योति के ही प्रतीक हैं।

हमारी नेत्र ज्योति बन्द हो उस से पूर्व ''परमज्योति'' का दर्शन, ध्यान-ज्ञान स्थिति हो जानी चाहिए यही हमारा मुख्य लक्ष्य है।

जन्म दिन में दीपक

प्राय: देखा गया है कि आजकल जन्मदिन पर लोग मोमबत्तियां जला करके उनको फूंक मारकर बुझाते हैं। यह वे लोग हैं जो अपनी संस्कृति को भूल कर पाश्चात्य सभ्यता को अपना रहे हैं।

हमारे यहां दीपक की पूजा होती है। दीपक का बुझना या बुझाना अपशकुन माना जाता है। पुत्र भी कुल का दीपक होता है और माता-पिता का नाम रोशन करने वाला। कई तो नाम भी कुलदीप, जगदीप, हरदीप आदि रखते हैं।

जन्मदिन में जो अपने कुल के दीपक को ही दीपक बुझाने को कहते हैं और जब वह दीपक (मोमबत्तियां) को बुझाता है तो आये हुए बन्धू तालियां बजाते हैं। अरे! कौन-सा उसने कीर्तिमान स्थापित किया है जो तालियां बजाते हो ? और आपने देखा होगा कि जब बच्चा फूंक मारकर मोमबत्तियों को बुझाता है तो उसके मुंह से हवा के साथ-साथ थूक भी केक पर गिरती है और फिर सभी उस केक को खुशी-खुशी खा जाते हैं। आहा! कितनी स्वच्छता प्रदान करती है हमें पाश्चात्य सभ्यता। फिर भी हम इस अस्वच्छता पर तालियां बजाते हैं।

तालियां उस दिन बजाओं जिस दिन यह बालक किसी के दिल में खुशी का दीप जला सके। अन्धेरे दिलों को रोशन करे। यदि आपको मोमबत्तियां जलानी ही हैं तो मानो 10 वर्ष वाले बालक की 9 मोमबत्तीयां छोटी और 10वीं बड़ी जलाइए छोटी अपने अपने जलकर शीघ्र बुझ जाएगी और बड़ी ज्यादा देकर तक रोशनी देगी। दीपज्योति या मोमबत्ती जला कर उसे ''परमज्योति'' की प्रेरणा दें।

केक काटने के मामले में भी छोटे से नन्हें बालक को छुरी पकड़ा कर काटने को कहते हो? ध्यान रखना जिसको बचपन में ही काटने की शिक्षा दी जा रही है, वह जाने क्या-क्या काटेगा। बालक को कुछ जोड़ने की शिक्षा दो, तोड़ने की नहीं। कृपया केक अण्डे वाला भूल कर भी न बनवाएं।

दीपक जलाना या बुझाना क्या है ?

किसी को दु:ख देना ही दीपक बुझाना है और स्वयं कष्ट सह कर भी किसी को सुख, लाभ पहुंचाना ही रोशनी करना है। जैसे गुरू या अध्यापक वह दीपक हैं जो स्वयं जल कर दूसरों को विद्या का प्रकाश देता है। एक कलाकार जब अपनी कला का प्रदर्शन करता है तो मन खुशी से झूमता है। किसान खेतों में अन्न पैदा करके अनेकों का पेट भरता है। सिपाही देश की सीमाओं की रक्षा करता है। डाक्टर (वैद्य) रोगियों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने का प्रयास करते हैं। विज्ञानी (साईंसदान) लोग नये-नये अविष्कार करके देश को सुख सुविधाएं प्रदान करते हैं। इंजीनियर (अभियन्ता) बड़े-बड़े भवनों बान्धों एवं पुलों का निर्माण करवाते हैं एवं मजदूर इत्यादि लोग खून पसीने का तेल डाल कर देश को उन्नत करते हैं। हमें भी पुरुषार्थ का दीप जला कर परोपकारी जीवन जीना चाहिये। वह जीवन किस काम का, जो जीवन हो केवल नाम का।

पापी के दीपक

सुना है पापी के घर दीपक नहीं जलता और यदि पाप कर के घर में जला भी ले तो भी जीवन से अन्धकार नहीं जाता जब तक वह सत्कर्म का दीपक नहीं जला

लेता। सुना है डाकू खड़क सिंह डकैती चोरी लूटमार करने में बड़ा विख्यात (मशहूर) था उसका बेटा जवान हुआ तो उसको भी अपने रास्ते पर चलाना चाहा। एक दिन रात्रि के समय घोड़े पर बैठा चम्बल घाटी में घुमा रहा था बड़ी शेखी (अहंकार) से कहता बेटे वो देख जो सामने घर में दीपक जल रहा है वहां मैंने इक्कीस बार चोरी की है।

बेटा बोला! पिता जी इतनी बार चोरी कर लेने पर भी उनके घर में दीपक जल रहा है और हमारे घर में आज तक दीपक नहीं जला? बस इतनी सी बात की चोट ने डाकू खड़क सिंह के मन को हिला दिया। अहंकार टूट गया मन बदल गया, विचार बदला और संसार बदल गया।

नजर बदली तो नज़ारे बदल गए। किश्ती का रुख बदला तो किनारे बदल गऐ। डाकू की आंखों में आंसू आ गए। बेटा बोला पिता जी ....

अगर दिल किसी का दुखाया न होता, जमाने में किसी को सताया न होता।
न मिलते तुझे पग-2 में कांटे, अगर कांटा किसी के चुभाया न होता।
न होता अन्धेरा कभी तेरे घर पर, जो दीपक किसी का बुझाया न होता।
न आते तेरी आंख में आज आंसू, किसी हंसते को गर रुलाया न होता॥

किसी निर्दोष को सताना माने अपने जीवन को अन्धकार के गर्त में डालना है। परिणाम दुःख, कष्ट और नर्क है। दूसरे के घर में अन्धेरा हो तो दुःख नहीं होता अपने घर का दीपक बुझता है तो पता चलता है।

यदि दुःख का अन्धेरा भगाना है, सुख का प्रकाश पाना है तो किसी को दुःख न देना।

इस "परमज्योति" को अपना कर जीओ।
जीवन में खुशी के दीप जला कर जीओ॥
मर मर के जीना भी क्या जीना है।
एक बार अमृत फल पा कर जीओ॥

संतों की संगत में आकर प्यारे।
जीवन को सफल बना कर जीओ॥
खुद जीओ औरों को भी जीने दो।
प्रेम का पाठ पढ़ो और पढ़ा कर जीओ।

भजन

–सन्त श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज

पढ़ने से जिसके आये विचार। सुनने से जिसके होए उद्धार ॥
जादू कर जाती है मेरे सतुरू की वाणी
मन हर लेती है मेरे सतुरू की वाणी.........

ऐसी अमृतवाणी, जो ईश्वर का राह बताये
श्रवण मनन निदिध्यासन कर जीव अमर हो जाये
लगा कर ध्यान, ले लो ज्ञान, बन्धन छुड़ाती है
मेरे सतुरू.......................

कब तक भटकते रहोगे विषयों से न तृप्ति मिटेगी
लाख यत्न चाहे कर लो, बिना ज्ञान मुक्ति न मिलेगी
आ के गुरू की शरण, वार दे तन मन, मोक्ष दिलाती है
मेरे सतुरू.........................

प्रभु राम की वाणी ने था तारा का कष्ट मिटाया
श्री कृष्ण की वाणी ने मोह अर्जुन का दूर हटाया
गुरू देव की वाणी ऐसी वाणी संशय मिटाती है
मेरे सतुरू.........................

आयो सारे मिलकर, ले सत्संग का सुन्दर नजारा
'सुभाष' क्या–क्या बतलाऊँ ये तो सबको ही देते सहारा
बन जायेगी तकदीर बिगड़ा भाग्य जगाती है...
मुझे ...ब्रह्म जनाती है.....मेरे.....

❋ ❋ ❋

अपने को जानो

–पूज्य श्री संत सुभाष शास्त्री जी महाराज

यह संसार सागर की भांति है, इसीलिए इसे भवसागर भी कहते हैं और हर किसी को इसको पार करना है अर्थात् अपने मानव जीवन को सार्थक बनाना है। इस भवसागर को कैसे पार किया जाए, इसका उपाय है कि गुरू ज्ञान रूपी नौका के द्वारा हम इससे पार लग सकते हैं। गुरू हमें सत्संग के मार्ग पर चलना सिखाते हैं और सत्संग या नाम के सहारे प्रभु हमें साकार रूप में दर्शन दे देते हैं। परंतु उनके दर्शनों से भी हमारा कल्याण नहीं हो सकता, क्योंकि जो मनुष्य निष्काम भाव से प्रभु का चिंतन करता है उसका केवल एक ही लक्ष्य होता है कि उसे मुक्ति मिले, प्रभु का धाम मिले, आत्म आनंद मिले, जन्म मृत्यु से छुटकारा मिले, इन सबके लिए आत्मज्ञान की आवश्यकता होती है, जो या तो गुरू देते हैं या प्रभु स्वयं प्रकट होकर देते हैं।

जो व्यक्ति साकाम भाव से प्रभु का चिंतन करता है, उसका लक्ष्य केवल सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति होता है और वह उसे प्राप्त भी हो जाती हैं, परंतु इस प्रकार वह अपने पथ से भ्रष्ट हो जाता है, अपना मनुष्य जीवन व्यर्थ गंवा देता है। इसलिए इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने का ज्ञानरूपी नौका के सिवा कोई रास्ता मनुष्य के लिए उपलब्ध ही नहीं।

मनुष्य के अन्दर अनन्त शक्तियां हैं और यह जागृत होती हैं सद्विचार के द्वारा, ध्यान के द्वारा , सत्संग के द्वारा, कीर्तन के द्वारा। कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है– प्रभु–भजन के द्वारा, प्राणायाम के द्वारा और गुरूवाक्य से भी यह जागृत हो जाती है। इन शक्तियों के चमत्कारी अनुभव साधक को होते हैं, परंतु यह अंतिम लक्ष्य नहीं होना चाहिए और उस पर ही साधक को अटक नहीं जाना चाहिए। असल में जिसके द्वारा यह अनुभूतियां होती हैं, सब ज्ञान जिसके द्वारा होते हैं वह ज्ञानस्वरूप परमात्मा है, ज्ञानस्वरूप ब्रह्म है, वह ज्ञानस्वरूप आत्मा है और वास्तव में वह ज्ञानस्वरूप तेरा अपना आपा है। और तुम्हारा "वह" जो सब कुछ जान लेता है वही ब्रह्म है, वही साक्षी है, वही दृष्टा है, वहीं इस संसार में व्यापक है, वही अगोचर, अजन्मा, अविनाशी, निर्लेप तथा चैतन्य है। भगवान जाने नहीं जा सकते, अपितु भगवान् के द्वारा ही, सत्य के द्वारा, ब्रह्म के द्वारा, आत्मा के द्वारा ही मनुष्य सब कुछ जान सकता है। भगवान आपको सामने दिख जाएं, मंदिर में मिल जाएं, गुरू रूप में मिल जाएं, बहुत अच्छा है, उन्हें देख कर उनसे मिल कर प्रसन्न हो जाओ, परंतु सत्य यह है कि जो भी इस संसार में दिखाई देता है उसका नाश अवश्यमेव है और जो तुम्हारे नेत्रों के द्वारा इन सब को देखने वाला है वह अविनाशी आत्मा है, वह सत्य है और जो सत्य है वह ही ब्रह्म है, अर्थात् वह तू ही तो है, फिर इस संसार में तू क्या ढूंढ़ता फिर रहा है। तू तो वह ढूंढ़ रहा है जो तेरे पास है, अरे जेब में पैसे रखकर तू सारा घर उल्ट–पल्ट कर रहा है उन पैसों को ढूंढ़ रहा है। थोड़ा सा प्रयास कर सत्य के मार्ग पर चलता हुआ, नाम का सहारा लेकर, अपने को जानने का प्रयास कर, जो तू आज तक संसार में खोज रहा था, वह तेरे भीतर से ही मिल जाएगा। इसीलिए तो किसी ने अपने को जानने का सहज रास्ता बताया :

ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर।
जीवन की कर ले नैया पार, ओ नादान मुसाफिर॥
विषयों से बचते जाना, जग में शुभ कर्म कमाना।
जीवन तो पाया है दिन चार, ओ नादान मुसाफिर॥
हीरा सा जन्म है पाया, मिट्टी में क्यों मिलाया।
जीवन का खोया सारा ज्ञान, ओ नादान मुसाफिर॥

अपने का साक्षात्कार आपको हो जाए इसके लिए ही विभिन्न कथाएं, दृष्टांत, भजन तथा सत्संग का हम सहारा लेते हैं, ताकि आपका चित्त शुद्ध हो जाए और आप अपने आपे को सहजता से जान सकें। क्योंकि अपने को जब जान लिया तो इस संसार में कुछ और जानने के लिए शेष नहीं बचेगा और जब कुछ और बचा ही नहीं तो आप में और परमात्मा में कोई अंतर नहीं रहेगा।

हम आपको कथा सुना रहे थे कि बिना ईश्वर की भक्ति के, बिना ईश्वर ज्ञान के, बिना सत्संग के, बिना प्रभु के ज्ञान प्राप्त नहीं होता और बिना ज्ञान के इस संसार से जाने को मन नहीं करता अर्थात् मृत्यु से भय लगता है, कारण अज्ञान। इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तुम्हें ''गुरू'' की शरणागत होना ही पड़ेगा, जो तुम्हें इस बात का बोध कराएंगें कि तू घड़ा, घड़ी, मटका, मटकी नहीं, तू तो मिट्टी है। मिट्टी जो इन वस्तुओं के निर्माण से पहले भी थी, इनके रहते भी है और इनके नाश होने पर भी रहेगी। मिट्टी कभी समाप्त नहीं होती, अपितु इससे बनी हुई वस्तुओं का ही नाश होता है। अरे, यही तो ज्ञान है और जब तुझे गुरू के द्वारा यह ज्ञान प्राप्त हो जाएगा कि तुझे कोई मार नहीं सकता, क्योंकि तू आत्मा है, शुद्ध है, बुद्ध है, मुक्त हैं, मृत्यु शरीर की होती है, तू अविनाशी है यह जान जायेगा तेरा मृत्यु भय स्वत: ही समाप्त हो जाएगा और फिर तेरा भवसागर से पार होना ऐसे ही सहज हो जाएगा जैसे कोई अबोध बालक छलांग लगाकर एक गड्ढे को सुलभता से पार कर लेता है। इसीलिए गुरू का महत्व मानव के लिए बहुत अधिक है, किसी ने कहा :

यह तन विष की बेल री, गुरू अमृत की खान।
शीश दिए जो गुरू मिलें, तो भी सस्ता जान॥

अंत में हम आप से अनुरोध करेंगे कि आगर आप वास्तव में अपना मानुष जीवन सफल बनाना चाहते हैं तो भोग-विलासों को छोड़, गुरू द्वारा बताए सत्य के मार्ग पर चलते हुए अपना जीवन जियें। नाम का सहारा लेकर प्रात: और सांय संध्या अवश्य करें, हम आपको विश्वास दिलाते हैं आपको आत्मिक शांति का अनुभव होगा।

ओम् शांति, शांति , शांति , हरी ओम् !

महाराज श्री के प्रवचन
सत्संग गुढ़ा छबीलिया - जम्मू
दिनांक 3-1-1999
(संकलन : अरूण शर्मा)

वेदान्त

– अनंत श्री विभूषित युग पुरूष स्वामी परमानंद जी महाराज

1. वेदान्त का सिद्धान्त

वेदान्त का सिद्धान्त, अनुकूल वृत्तियों का प्रवाह चलाना और प्रतिकूल वृत्तियों का तिरस्कार करना है। अनात्म संसाराकार वृत्तियों का; देहात्मक प्रवृत्तियों का; मैं शरीर हूँ, जन्मा हूँ, मर जाऊँगा; ऐसी वृत्तियों का तिरस्कार करना है। मैं जन्म-मरण रहित हूँ और विकार रहित हूँ, ऐसी वृत्तियों का सत्कार करना है। सत्कार और तिरस्कार को भी समझना है। यों ही तिरस्कार नहीं करना है। क्या तुम्हें मृत्यु पसन्द है? यदि नहीं, तो मृत्यु का ख्याल क्यों करते हो? यदि मरना पसन्द नहीं है, तो मरने वालों के साथ रिश्ता क्यों करते हो? अपनी वृत्तियों का रिश्ता ही उनके साथ न करो। लोग अपनी बेटी का ब्याह देख-सुंनकर करते हैं। आप अपनी वृत्तियों का सम्बन्ध उन विजातीय लोगों के साथ, विजातीय शरीरों के साथ, जो जड़ हैं और बदलने वाले हैं; न करें। आपको जीवन तो पसन्द है अविकारी और वृत्ति का ब्याह कर रहे हैं विकारी से।

अनात्म वृतियाँ तिरस्कार के योग्य हैं। तिरस्कार के योग्य होने का मतलब यह नहीं होता कि किसी की व्यर्थ निन्दा करना। हमको तिरस्कार का यह अर्थ पसन्द नहीं है। हमें वह पसन्द नहीं है, ये ही उसका तिरस्कार है। मृत्यु से जुड़ना, जन्म से जुड़ना, विनाशी से जुड़ना और विकार से जुड़ना हमें पसन्द नहीं है। ऐसा हमें स्वभाव से ही प्रिय नहीं है। जो हमारा स्वभाव नहीं है, उसके साथ 'मैं पन' का रिश्ता नहीं करना है। जो हमें पसन्द है, उसका कभी त्याग नहीं करना है। हमें सतत् प्रवाह, सतत् विचार और सतत् वृत्ति पसन्द नहीं है। मरने वाले से यह आशा करना कि वह यह वृत्ति बना ले कि 'मैं नहीं मरता', उचित नहीं है। मान लो कि कोई व्यक्ति, जिसका शरीर काला है, वह शीशे में देख रहा है। क्या वह यह निश्चय कर पायेगा कि वह काला नहीं है।

हम यह निश्चय भी करना चाहें कि हम जन्मते-मरते नहीं हैं; तो इस निश्चय के लिए भी कोई आधार चाहिए। यह साँप नहीं है रस्सी है, यह निश्चय कैसे कर पाओगे? प्रकाश से और देखकर ही निश्चय कर पाओगे। एक बार यह दिखना चाहिए कि वह क्या है? यदि, एक बार उसे यह दिख जाए कि वह रस्सी है, तो निश्चय हो ही जाएगा कि नहीं? दिख जाने के बाद तो यह निश्चय हो ही जाएगा कि वह रस्सी है। मान लो कि बिना देखे ही निश्चय हो जाए कि वह रस्सी है। अभी तक तो साँप दिखता है। अब यह निश्चय करो कि वह रस्सी है। पहले क्या होना चाहिए? पहले निश्चय होना चाहिए कि पहले दि्खना चाहिए?

सभी महात्मा यह निश्चय कराते हैं कि तुम ब्रह्म हो। वे कहते हैं कि यह निश्चय करना है कि तुम ब्रह्म हो। हमें दिख तो यह रहा है कि हम मर जाएँगे; फिर, अविनाशी होने का निश्चय कैसे कर लें? हम विकारों से मरे जा रहे हैं और निर्विकार होने का निश्चय कंर लें? गड़बड़ तो यही है। पता नहीं, वे कैसे निश्चय करवा देते हैं? ये गुरू लोग भी धन्य हैं; जो ऐसा निश्चय करा देते हैं। इसलिए, वर्षो निश्चय कराने पर भी, सारे निश्चय का दिवाला निकल जाता है; क्योंकि, निश्चय का आधार

ही नहीं है।

निश्चय कभी निराधार नहीं हुआ करता। हम मरते हैं, इस निश्चय का भी आधार है। वह है दृश्य से तादात्म्य। आप मर जाएँगे, यह निश्चय आपको इस बात से है कि आप आदमी हैं। आप जन्मते हैं, आप देह हैं, आप बूढ़े हो जाएँगे और आप मर जाएँगे; ये जो विचार आपके मन में उठ रहे हैं, क्या आप उन्हें उठा रहे हैं? क्या आप यह निश्चय कर रहे हैं कि आप मर जाएँगे? आप यह निश्चय करके दिखाओ कि आप नहीं मरेंगे?

तुम्हें यह लगता है कि तुम देह हो। यह अपरोक्ष है। मैं बूढ़ा हो जाऊँगा: मैं मर जाऊँगा; यह निश्चय तो स्वत: ही होता है। बल्कि, यह कहो कि यह निश्चय हटाए नहीं हटता। यह निश्चय हट भी नहीं सकता। यह सर्प नहीं है; यह सर्प नहीं है यह सौ वर्ष तक रटते रहो। यह सर्प नहीं है; यह इसलिए रटना पड़ता है कि तुम्हें रस्सी का ज्ञान नहीं है। तुम्हें रस्सी का ज्ञान हो जाए, तो सर्प नहीं है। क्या यह भी कहना पड़ेगा? इसीलिए, जो नहीं है, वह मालूम पड़े और जो है, वह भी मालूम पड़े।

'नहीं है' का परिवर्तन तो हमारे यहाँ दूसरे तरीके से भी मान लिया गया है। यह सर्प नहीं है, यह ज्ञान होने पर भी दूसरा भ्रम हो जाता है कि कोई पेशाब कर गया है। यहाँ डर से मतलब नहीं है; भ्रम से ही मतलब है। वहाँ चाहे साँप दिख रहा हो या पेशाब की लकीर दिख रही हो। किसी ने पेशाब कर दी है और यह पेशाब की लकीर है। अब पेशाब करने वाले के लिए गाली आ रही है। पहले आप डर रहे थे; अब आप द्वेष कर रहे हैं। कैसे नालायक लोग हैं, जो मैदान में ही पेशाब कर गए?

पेशाब कोई भी नहीं कर गया है। लेकिन, अब इस समस्या का समाधान कैसे हो? रस्सी में साँप दिखे अथवा रस्सी में पेशाब की लकीर दिखे; यह भ्रम कैसे दूर हो? एक आदमी को फर्श में दरार दिखलाई देती है। वह दरार नहीं है; वहाँ रस्सी पड़ी है। वह रात को दरार लगती है। यह सर्प नहीं है, तो पेशाब की लकीर है और पेशाब की लकीर नहीं है, तो दरार है। एक निश्चय हटाया, तो दूसरा निश्चय किया। निश्चय हटाया नहीं, ऐसा लगता गया। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा लगता गया। लेकिन, यह अभी तक नहीं लगा कि रस्सी है। यदि, रस्सी है, यह लगने लगे; तो फिर तीनों का क्या होगा? तीनों समाप्त।

मैं स्थूल शरीर हूँ; मैं सूक्ष्म शरीर हूँ और मैं कारण शरीर हूँ; ये जो तीन भ्रम हैं, ये साक्षी के अज्ञान से ही है। क्योंकि–

'जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती, हैं बुद्धि की अवस्था।
हूँ बुद्धि से परे मैं, याते सदा शिवोऽहम्॥'

तुम बुद्धि से परे हो, यह पहले जानो। जानने के बाद, अपरोक्ष अनुभव के बाद, प्रत्यक्ष ज्ञान के बाद, निश्चय अपने आप ही हो जाता है। जगत् में प्रत्यक्ष ज्ञान ही निश्चय है। जिसको सर्प-निश्चय हुआ है, उसे भी प्रत्यक्ष दिखता है कि यह साँप है। दिखना ही तो निश्चय है। इसी तरह से, आप निर्विकार हैं यह मालूम पड़े; तो निश्चय होगा। वृत्तियों के बदलने में, नित्य विद्यमान एकरस आपकी उपस्थिति है। वृत्तियों के परिवर्तन का, साक्षी के आस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह तुमको अपरोक्ष अनुभव होने पर विदित होगा। जग जाने पर, स्वप्नों का प्रकाशक ही शेष बचा; स्वप्न नहीं बचे। अब जो कुछ है, यह तो जाग्रत का है; स्वप्न का नहीं है। साक्षी को छोड़कर, स्वप्न का जाग्रत में कुछ नहीं आता

और जाग्रत का स्वप्न में कुछ नहीं जाता।

एक गहने को तोड़कर नया गहना बना देते हैं। नए गहने में पुराने गहने का कोई अस्तित्व नहीं है। नए गहने को तोड़कर फिर बदलो। अब, बदले हुए गहने में, नए गहने का जरा भी अस्तित्व नहीं है। नया गहना जीरो हो गया और बदला हुआ गहना पूरा हो गया। यह जीरो हो गया; वह पूरा हो गया। यह वहाँ नहीं है; वह यहाँ नहीं है और एक वहाँ भी था और एक यहाँ भी है। उसका नाम तो तुम जानते ही हो। वह सोना है। इसी तरह से, स्वप्न में स्वप्न पूरा था; जगत् नहीं था और जाग्रत में यह जगत् पूरा है; स्वप्न जीरो हो गया है। वह पूरा दिखता था, पूरा था नहीं; वही यह अधूरा हो गया। पूरा दिखना अलग है और पूरा होना अलग है। स्वप्न पूरा दिखता था। लेकिन, जागने पर पता चला कि स्वप्न तो कुछ भी नहीं है; साक्षी है। अब, जगत् सच दिखता है; पर अब भी साक्षी ही पूरा है; जगत् पूरा नहीं है। साक्षी ही है और वह सदा है।

2. वेदान्त क्या है ?

मैं कहता हूँ कि इस धरती पर, वेदान्त के अलावा, उद्धार करने वाला कोई दर्शन ही नहीं है। अध्यात्म विद्या ही एकमात्र विद्या है। यह न स्वर्ग जाने की विद्या है, न नरक जाने की। यह पुण्य की विद्या भी नहीं है। पापियों के लिए भी इस के द्वार खुले हुए हैं; बशर्ते कि उनका अन्त: करण इसके लिए तैयार हो गया हो। माँस खाने वाले को भी बोध हो जाएगा; लेकिन ऐसे मूर्खों को बोध नहीं होगा, जो इस विद्या का आदर नहीं करते। ब्रह्म विद्या से ज्यादा किसी चीज़ को महत्व देने वाले को भी बोध नहीं होगा। यह अद्वितीय विद्या है। यह सर्वोपरि विद्या है। यही उपनिषद् विद्या है। ब्रह्म विद्या का दूसरा नाम ही उपनिषद् विद्या है।

'त्वं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि'

अर्थात् उपनिषदों ने ही इस विद्या को समाज में प्रचलित किया है। अध्यात्म विद्या के मूल ग्रन्थ वेद और उपनिषद् हैं। इन ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद, इनके सिद्धान्तों का, हिन्दी, गुरुमुखी, संस्कृत, उर्दू, फारसी या किसी अन्य भाषा में, उपदेश किया जा सकता है। गीता उपनिषदों से ही निकली है। इसलिए, गीता भी उपनिषदों की ही तरह सम्मान के योग्य है। सरलता की दृष्टि से, वह उपनिषदों से भी ज्यादा अच्छी है। भाषा की दृष्टि से, उपनिषद् हमारे लिए कठिन हैं।

*

वेदान्त, चेला बनाकर सुनाने की विद्या नहीं है। इसे कोई भी श्रद्धावान सुन सकता है। जिनके अन्दर सुनने का भाव है, उन्होंने चाहे मन्त्र लिया हो या न लिया हो, वे सब शिष्य हैं और सुनने के हकदार हैं। अर्जुन ने भगवान् कृष्ण से कोई गुरुमन्त्र नहीं लिया था। कृष्ण ने गीता में अर्जुन से कहीं नहीं कहा कि ये मन्त्र रट। फिर भी अर्जुन शिष्य है। कृष्ण सुनाते हैं और अर्जुन सुनता है।

*

बड़ाई कहीं बाहर नहीं मिलती, वह तुम्हारी सूझ-बूझ है। तुम क्यों चाहते हो? बड़ाई के गुलाम क्यों हो? अपनी आत्मा को क्यों बेचते हो? क्या तुम्हारी आत्मा किसी से कम है? यही तो पहला दर्शन है कि कोई भी व्यक्ति अपनी आत्मा में कभी कमी महसूस न करे।

3. वेदान्त सुनने के अधिकारी

असल में तो वेदान्त सुनने के दो ही अधिकारी हैं। एक तो वे, जिनकी प्रबल जिज्ञासा है; दूसरे वे, जो ज्ञानी हैं। यह मत समझना कि ये जो सब सुनते हैं, इनको ज्ञान नहीं है। मैं यह कहता हूँ कि ज्ञान के बाद वेदान्त के सुनने में जो आनन्द आता है; वह आनन्द उसके पहले तो आता ही नहीं है। फिर तो यह लगता है, जैसे कि मेरी ही कथा हो रही है।

4. वक्ता का कर्त्तव्य

वेदान्त, जिसने इतना सूक्ष्म चिन्तन किया है; ब्रह्म चिन्तन किया है; वह ऐसा कैसे कह देगा? स्त्री और पुरुष में भेद है। पशु और आदमी में भेद है। जीव-जीव में भेद है। जीव और ईश्वर में भेद है। जीव अलग है और ईश्वर अलग है। ढेले में और घड़े में भेद है कि नहीं? ईंट और घड़े में भी भेद है। पानी भरना हो, तो ईंट में भरोगे कि घड़े में ? लेकिन, यदि एक को देखो, तो दोनों में अभेद है। दोनों में एक अभेद है और एक ही सत्य है। भेद झूठा है। दोनों का भेद झूठा है। वह दिखता भर है। सत्य वस्तु में भेद नहीं है। उसमें भेद रहने वाला भी नहीं है।

प्रवाह रूप से तो भेद चलता रहेगा। दूसरी ईंटें हैं, दूसरे घड़े हैं। प्रवाहरूप से तो द्वैत भी नित्य लगेगा; भेद भी नित्य लगेगा; लेकिन, भेद कल्पित है। भेद अनित्य है; अभेद नित्य है। सत्य नित्य है। अधिष्ठान नित्य है। भेद अध्यस्त है कल्पित है। देखो! वेदान्ती लोग कहते हैं जीव-जीव में भेद है। जीव ईश्वर में भेद है। यह भेद आदमी के लिए है। एकदम नहीं मत कहो। क्योंकि नहीं कहने से पहले तो श्रोताओं की समझ में भी नहीं आता। वे सोचते है कि बाबा पागल तो नहीं हो गए हैं। यदि हम कहें कि न यहाँ पंडाल है और न यहाँ सभा है; तो क्या यह बात तुम्हें उचित मालूम देती है?

हम पहले यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम क्यों कहते हैं कि यह जगत् मिथ्या है? जगत् मिथ्या कहने भर से ही यदि बात बनती; तो हम माथा-पच्ची क्यों करते? तुम ब्रह्म हो, यदि यह कहने से तुम्हारा मोक्ष हो जाता, तो हम इतनी झंझट क्यों करते और ऋषि लोग भी इतने ग्रन्थ क्यों लिखते? वे इतना चिन्तन क्यों करते? सत्य होते हुए भी सत्य दिखता नहीं है और असत्य, असत्य होते हुए भी असत्य लगता नहीं है। असत्य को जानने वाला असत्य कह दे; सत्य को जानने वाला केवल सत्य कह दे। यह वक्ता की बात नहीं है। क्या वक्ता का यह कर्त्तव्य नहीं है कि सत्य को सत्य कह दे और झूठ को झूठ कह दे?

5. अविद्या

अब वेदान्त की बात कहेंगे, क्योंकि, जब तक हम वेदान्त न सुनाएँ, तब तक हमें भी सन्तोष नहीं होता। यह सब कुछ तो वेदान्त सुनाने की भूमिका थी। इसके पहले, लोग वेदान्त सुनने के लायक ही नहीं होते। क्यों नहीं होते?

'ब्रह्मलोक लौं भोग जो, चहै सवन को त्याग।
वेद अर्थ ज्ञाता मुनी, कहत ताहि वैराग॥'
'धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ज्ञान मोच्छप्रद बेद बखाना॥'

धर्म से विरति यानी वैराग्य होता है और वैराग्य के बाद ही, चित्त समाहित होकर योग को प्राप्त होता है। बिना वैराग्य के योग नहीं होता। इसलिए, 'धर्म तें विरति' और विरति से योग होता है। योग से ज्ञान होता है। जिनके जीवन में धर्म है, उनके जीवन में वैराग्य आ जाएगा। जो धर्म का त्याग करके धन कमाने में, जोड़ने

में, मान पाने में लगे हैं; उनका बेड़ा कैसे पार होगा? वे न तो गुरू देखते हैं और न चेला देखते हैं। उन्हें तो सम्मान चाहिए। वे यह नहीं देखते कि किससे लेना है, किससे नहीं लेना है। उन्हें तो सबसे लेना ही लेना है।

गुरू से भी लोग मान चाहने लगे हैं। गुरू से भी लोग आशा करते हैं कि गुरुजी उनसे सम्मान से बोलें। जब गुरु ही सम्मान से बोलेंगे, तो फिर तुम्हारे मान का क्या होगा? एक ही तो जगह थी, जहाँ मान नहीं चाहिए था। दुनियां में सब जगह मान लेते रहते; पर, एक जगह तो मान न लेते। तुम्हारे लिए नरक में भी कहीं जगह है? ऐसे आदमी के, जो गुरु से भी मान चाहेगा, मान की पूर्ति तो परमात्मा भी नहीं कर सकता। इसलिए, मान का त्याग कर दो; स्वार्थ का त्याग कर दो; फिर, अपने जीवन के भीतर झाँककर देखो।

जब वैराग्य हो जाएगा, तब तुम्हें मालूम होगा कि संसार में सुख नहीं है; बल्कि, संसार की चाह से ही दु:ख है। जिसको तुम सुख रूप समझ रहे हो, वही दु:ख है। योग दर्शन इसे अविद्या कहता है। इसमें दु:ख में सुख-बुद्धि होती है। जो दु:ख है वह सुख भासता है। मान, सुख भासता है; जबकि, मान ही दु:ख दे रहा है। प्रपञ्च, वैभव, दु:ख है; किन्तु सुख भासता है।

व्यक्ति की अनात्मा में आत्म-बुद्धि हो गई है। अनात्मा में, जो 'मैं' नहीं हूँ, वह 'मैं' भासता है; जो 'मैं' हूँ; वह 'मैं' नहीं लगता। यह अविद्या की ही कृपा है। इसलिए, अनात्मा में आत्मबुद्धि; दु:ख में सुख बुद्धि और अशुचि में शुचि बुद्धि है। जो अपवित्र हैं, उनमें पवित्रता भासती है। कामना के कारण स्त्री आदि में सुख भासने लगता है। उन अंगों में, जिनमें गन्दगी भरी है, उनमें अपवित्रता का अहसास नहीं होता।

काम, अपवित्रता भासने ही नहीं देता; इसलिए, अशुचि में शुचि बुद्धि है। यह अविद्या की ही लीला है। अनित्य में नित्य बुद्धि है। असत् में सत बुद्धि है। जो रहेगा नहीं, उसके रखने में ही व्यक्ति लगा है। उसकी समझ में नहीं आता कि यह रहेगा ही नहीं, तो फिर क्यों मेहनत करूँ। जो होगा नहीं; जो कभी पूरा नहीं हो सकता; उस काम को करने में ही लगा है। वह, वहाँ कुआँ खोदता है; जहाँ पानी निकलने वाला नहीं है। उसे, इतना भी तो विवेक नहीं है और ब्रह्मज्ञानी बना फिरता है। जो मन को ही नहीं समझ सके, क्या वे ब्रह्म को समझेंगे?

इस धूर्त मन की चाल को, कोई सन्तजन ही जानते हैं। वे जानते हैं कि मन कैसे बहकाता है? मन ने बड़े-बड़े लोगों को ठगा है। वह लोगों को, ज्ञान के नाम पर, मोक्ष के नाम पर, वहाँ खड़ा कर देता है, जहाँ घोड़े-गधे भी खड़े नहीं किए जा सकते। वह उनमें घसीट कर ले जा रहा है, जिनमें चैन नहीं है। फिर भी, हम ज्ञानी हैं; हम पण्डित हैं।

'पण्डित और मसालची, इनकी उलटी रीति।
औरन करते चाँदना, आप अँधेरे बीच॥'

पहले शादियों में मशालची मशाल लेकर चला करते थे। बरातियों को तो वे उजाले में रखते थे और आप अंधेरे में रहते थे। पण्डितों का भी यही हाल है। वे स्वयं तो अज्ञान के अन्धकार में रहते हैं; लेकिन, दूसरों को ज्ञान बाँटते फिरते हैं। यहाँ 'पण्डित' का अर्थ जाति विशेष से नहीं है। पण्डित का अर्थ केवल दूसरों को भाषण देने वाले से है। जो अपने जीवन में झाँककर नहीं देखते कि वे कहाँ जी रहे हैं; वे दूसरों को क्या समझाएँगे? वे अपने-आप को ज्ञान में स्थित नहीं कर पाए; कामनाओं

की पूर्ति में उलझे रहते हैं और ऐसे कामों की पूर्ति में लगे रहते हैं, जिनकी पूर्ति कभी होती ही नहीं है।

हमने ऐसे लोगों को देखा है, जिन्होंने दस-दस गुरू बदले हैं। पहले एक गुरू बनाया; उससे लाभ उठाया। फिर, दूसरा गुरू बनाया। फिर, किसी पैसे वाले गुरू को पकड़ा और उसे गुरू बना लिया। फिर, किसी मण्डलेश्वर को गुरू बना लिया। फिर, किसी, शंकराचार्य को पकड़ा। वे सत्त इसी प्रयत्न में लगे रहते हैं कि जल्दी से जल्दी उनकी पोस्ट ऊँची हो जाए।

जो पोस्ट चुनाव से ऊँची होती है, उसमें पवित्र जीवन की क्या जरूरत है? चुनाव में तो मूर्ख व्यक्ति भी जीत जाते हैं और वे मिनिस्टर भी बन जाते हैं। प्रधानी के चुनाव में जब पार्टीबाजी होती है, तो किसी ठाकुर या ब्राह्मण को हराने के लिये, लोग किसी चमार को खड़ा कर देते हैं। अपना बदला निकालने के लिये, वे उसको वोट दे कर जिता देते हैं।

किसी मूढ़, अज्ञानी को चुनाव में जिता दें, तो क्या वह ज्ञानी हो जाएगा? यदि ज्ञानी है, तो चाहे किसी भी पद पर न हो, फिर भी ज्ञानी है। चुनावों में जीतना तो राजनैतिक बात है, सामाजिक बात है; किन्तु साधुता सामाजिक बात नहीं है।

क्रमशः

(साभार: अमृत सरोवर)

The Word Education : Means

Swami Parmanand Ji Sarswati,
Managing Director, Cosmic Heart Sr. Sec. School, Kathua.

Today, I would like to say few words regarding the word, 'EDUCATION' in brief. It has become the matter of a great importance to know the great & the great hidden meaning in the depth of the word, 'EDUCATION'. Rather having the real knowledge of 'EDUCATION', can lead this human race to have the basic and real concept of the human philosophy.

The education does not mean only Alphabetical knowledge. The real meaning of 'EDUCATION' is "SA VIDYA YA VIMUKTAYA". The education is that which liberate the human being from all the mundane, supermundane and spiritual bondages i.e. (Physical, psychic and psycho-spiritual bondages).

Here I would like to throw a light on the alphabetical meaning of each alphabet of the word. 'EDUCATION'.

In the word 'EDUCATION' the alphabet :-

E : Stands for Enlargement of mind.

D : Stands for 'DESMEP'.

(a) D- stands for discipline

(b) E-stands for etiquette

(c) S- stands for smartness.

(d) M- stands for morality.

(e) E- stands for English as it has become the universal language

(f) P- stands for pronunciation which proves the quality of education of the individual.

U : THe alphabet 'U' stands for Universal outlook.

C : 'C' stands for character which is considered the greatest quality of the human being.

A : 'A' stands for active habit, means one must adopt the good habits in life.

T : The alphabet 'T' stands for Trust worthiness. In the last few decades, have made the people feel the great importance. of this word in this corrupt atmosphere.

I : 'I' stands for the ideation of the 'GREAT'. At present this is the only way of getting elevation and salvation for the human personalities.

O : The alphabet 'O' stands for the Omnicient grace for the real success in life.

N : 'N' stands for the nice temperament and it can alone provide the peace and happiness in life.

So keeping in view the meaning of each alphabet, practiced in day to day life, can provide the human being to have the supreme bliss in life; which is considered to the ultimate goal of this human civilization. Swami Vivekanand has said, "Education is the manifestation of perfection already in man. A great thinker has said, "Educated is he who has learnt much, remembered much and made use of them in their practical life. His virtue, shall we call by the name of 'EDUCATION'.

So it can be confidently said that the practice of the above virtue in man's life, not only the people of this soil but also the people of the world can lead the life of peace and prosperity and can enable the unite consciousness in merging into the supreme consciousness, the perfection. □

निरोगी तन-स्वस्थ मन

–अरूण शर्मा, साधक, भारतीय योग संस्थान, जम्मू।

एक पुरानी कहावत है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा वास करती है। परंतु आज के भौतिकवादी युग में मानव इतना व्यस्त हो चुका है कि वह औरों के विषय में क्या विचारेगा, अपने शरीर के विषय में भी जानने के लिए उसके पास पर्याप्त समय नहीं। आप दिन-रात दौड़-धूप करके माया तो एकत्रित कर सकते हैं, परंतु उस माया से आप शारीरिक सुख खरीद नहीं सकते। तन का सुख बहुत बड़ा सुख है और यह तभी भोगा जा सकता है जब तन स्वस्थ होगा। सुख के अतिरिक्त आपका मन संसार के हर काम में लगेगा, यहां तक कि प्रभु भक्ति भी स्वस्थ तन के रहते ही हो सकती है।

हमारा सौभाग्य है कि पूज्यपाद गुरूदेव, संत श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज द्वारा प्रकाशित इस मासिक पत्रिका, ''परमज्योति'' के माध्यम से, हम आपको अष्टांग योग के विषय में लगातार संदेश देते रहेंगे और हमें पूर्ण आशा है कि आप वर्णित विधियों का अभ्यास कर अपने को अवश्य लाभान्वित करेंगे।

इस प्रथम लेख के द्वारा हम आपको बतलाएंगे कि हमारा समस्त स्थूल शरीर रीढ़ की हड्डी पर टिका हुआ है, जिसकी लम्बाई 19 इंच अनुमानत: होती है और इसमें 33 गोटियां होती हैं। रीढ़ की गोटियों से 31 जोड़े (Pairs) नाड़ियां निकलती हैं और इनका कार्य बहुत ही सूक्ष्म है। आधी नाड़ियां मस्तिष्क (Brain) को संदेश पहुंचाती है और शेष आधी वहां से शरीर के लिए संदेश लाती हैं। इन 33 गोटियों की स्थिति इस प्रकार होती है :

गर्दन	7	गोटियां
पीठ	12	गोटियां
कमर	5	गोटियां
बस्ति प्रदेश (Hips etc.)	2	(5+4) गोटियां (आपस में मिली हुईं)

रीढ़ में विभिन्न स्थानों पर स्थित गोटियों के मध्य में जो तंत्रिका स्थित है उसमें से एक तरल पदार्थ संचारित होता है जो हमारे शरीर के सब भागों को संचालित करता है। इस तरल पदार्थ को (Brain Fluid) मस्तिष्क रस कहते हैं और जब हमारी रीढ़ के किसी भाग में कोई दोष आता है तो गोटियों की स्थिति के अनुसार हमारे शरीर के उस भाग को कष्ट हो जाता है।

हमारी रीढ़ पूर्णता स्वस्थ रहे और हमें गोटियों की तंत्रिकाओं की व्याधियों से कोई शारीरिक कष्ट न हो, उसके लिए हम आपको कुछ सुझाव देते हैं :-

1) चलते समय पीठ तथा सिर का भाग सीधा रखकर ही चलें, अकड़ कर नहीं, स्वाभाविक रूप से सीधा रखकर।

2) जब बैठें तो किसी ऐसे आसन में (Posture) में बैठें की आप की पीठ तथा गर्दन सीधी रहे।

3) जब भी लेटें, ऐसे बिस्तर का उपयोग करें जिसमें गद्दा न हो। प्रयास करें तख्तपोछ अथवा धरती पर ही लेटें। तकिए का प्रयोग न करें तो बहुत लाभप्रद होगा, परंतु अगर करना ही है तो उसकी मोटाई कम से कम हो।

4) धरती से जब भी कोई वस्तु उठानी हो तो नीचे न झुकें, अपितु दोनों पांवों पर बैठकर उसे उठाएं।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि अगर आप उपरोक्त सुझावों का पालन करेंगें तो आपको रीढ़ के प्राय: होने वाले दोष कभी नहीं सता सकते। **(क्रमश:)**

नोट : जम्मू प्रांत के विभिन्न नगरों में भारतीय योग संस्थान द्वारा संचालित नि:शुल्क योग कक्षाओं मे भाग लेकर लाभान्वित होवें।

ननाथ (घगवाल)

–विजय शर्मा

(अखण्ड परमधाम दी स्थापना दे मौके पर)

सन्तें दा करी लैओ साथ लोको।
स्वर्गपुरी बनी ऐ ननाथ लोको॥
इक्क पासै नरसिंगें दा दिक्खो बास ऐ।
दूऐ पासै बांके बिहारी दी रास ऐं।
होई गेई ऐ कैसी करामात लोको।
स्वर्ग पुरी बनी ऐ ननाथ लोको॥
होई गेई ऐ स्थापना 'अखण्ड परम धाम दी'।
नित्त इत्थै चर्चा ऐ माह्नू दे कल्याण दी।
लग्गा रौह्ना लंगर ऐ दिन रात लोको।
स्वर्गपुरी ....
कल्लै तोहड़ी जेहड़ी एह् धरती बरान ही।
अज्ज इत्थै बगदी ऐ गंगा गै ज्ञान दी।
भक्तें दी बैठी ऐ जमात लोको।
स्वर्गपुरी.......................
संत सुभाष शास्त्री जी भागवत न वाचदे।
भगतें ते सेवकें गी चंगी चाल्ली जाचदे।
बंडदे न ज्ञान दी सगात लोको।
स्वर्गपुरी.........................
दिन रात कीते दा शास्त्री जी ने इक्क ऐ।
कुसै गित्तै कुत्तै नेईं मनै विच्च फिक्क ऐ।
इन्नी गै बस इन्दी ऐ खुराक लोको।
स्वर्गपुरी ....
अखण्ड परम धाम जी ऐ जिसलै सोआरना।
स्वामी श्री परमानंद जी नै पधारना।
दस्सनी ऐ गल्ल जि नै खास लोको।
स्वर्गपुरी ....

लग्गने न ध्यान, साधनां ते होने योग न
मुक्की जाने जिन्दू गी जो लग्गे दे रोग न।
होना ए बमारिएं दा नास लोको।
स्वर्गपुरी................
गौशालां बननिआं स्कूल बी न चलने।
बड़े लाडें-लाडें नै ओह्बी इत्थै पलने।
बच्चे न जेहड़े अनाथ लोको।
स्वर्गपुरी ....
कीता जि'नें दानिएं भूमी दा दान ऐ।
अज्ज उत्थै दूरै-दूरै तोह्ड़ी छायावान ऐ।
कन्नै-कन्नै लिशकदी कनात लोको।
स्वर्गपुरी.........................
कार सेवा करने गी सारे गै तेआर न।
बैरिएँ दे बैरी न ते यारें दे एह् यार न।
सेवकें दे दिक्खो हां जज़बात लोको।
स्वर्गपुरी ....
दिक्खी लैती दुनिया दुखें दा जंजाल ऐ।
मनै विच्च आया जदूं बी बोआल ऐ।
चुक्की लैती कलम ते दोआत लोको।
स्वर्गपुरी............................
सन्तें दा जिसदे कन्नै शीरवाद ऐ।
दुनिया सदा उसदी गै रौह्न्दी आवाद ऐ।
होन्दा कदें चित्त नेईं दोआस लोको।
स्वर्गपुरी..............................

अमृत गंगा

यदि दृढ़ मित्रता चाहते हो तो मित्र से बहस करना, उधार लेना-देना और उसकी स्त्री से बातचीत करना छोड़ दो, यही तीन बातें बिगाड़ पैदा करती हैं।

यह विधि का विधान है कि आयु, कर्म, सम्पत्ति, विद्या और मृत्यु यह पांच बातें जीव के गर्भ में आते ही उसके भाग्य में लिख दी जाती हैं और वह उसके अनुसार ही सब भोगता है।

–चाणक्य

जैसे हजारों गायों के बीच में से बछड़ा अपनी माता के पास आता है, ठीक उसी प्रकार किया हुआ कर्म, कर्त्ता के पीछे-पीछे जाता है।

पशुवृत्ति की ओर झुक कर मनुष्य सच्चे मार्ग से भटक जाता है।

–अज्ञात

नम्रता की ऊंचाई का कोई माप नहीं।

–विनोबा भावे

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं, शेष सब नाममात्र के भूषण हैं।

–संत तिरूवल्लुवर

जिस मनुष्य का अपने ऊपर नियंत्रण नहीं है, वह दुर्बल चरित्र वाला है।

–कन्फ्यूशियस

मनुष्य की महानता उसके कपड़ों से नहीं, अपितु उसके चरित्र से आंकी जाती है।

–महात्मा गांधी

चरित्रवाण होने से हमें सब कुछ उपलब्ध हो सकता है तथा बिना चरित्र के हम प्रत्येक वस्तु खो देते हैं।

–गोलवलकर

बुद्धि से चरित्र बढ़ कर है।

–एमर्सन

संकलन : अरूण शर्मा

श्री कृष्ण सम्वत् 5225 विक्रमी 2057 आगामी वर्ष 2001 में कुम्भ पर्व है

– पूज्यश्री संत सुभाष शास्त्री जी महाराज

शास्त्रों में प्रयाग राज तीर्थ पर कुम्भ स्नान-दान, जप, ध्यान एवं यज्ञादि अनुष्ठान करने का विशेष महात्मय माना गया है। हजारों अश्वमेध यज्ञ करने से, सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से अथवा समस्त पृथ्वी की लाख वार परिक्रमा करने से जो पुण्य फल प्राप्त होते हैं,वही फल मात्र कुम्भ स्नान करने से मिल जाते हैं।

कुम्भ एवं माघ स्नान की कुछ विशेष पुण्य तिथियां

1. प्रथम स्नान तिथि-शनिवार 5 जनवरी 2001 ई॰ पौष शु॰ पुत्रदा एकादशी।
2. द्वितीय स्नान-पौष 9 जनवरी बुधवार पूर्णिमा एवं चन्द्र ग्रहण।
3. तृतीय स्नान-माघ कृष्ण चतु पंचमी तिथि शनिवार 13 जनवरी मकर संक्रान्ति।
4. चतुर्थ स्नान-माघ कृष्ण पंचमी रविवार 14 जनवरी।
5. पंचम कुम्भ स्नान मुख्य तिथि-माघी मौनी अमावस बुधवार 24 जनवरी।
6. षष्ठ स्नान-सोमवार 29 जनवरी शिवयोग बसन्त पंचमी।
7. सप्तम स्नान-रविवार 4 फरवरी जया एकादशी।
8. अष्टम स्नान-गुरु वार 8 फरवरी माघ पूर्णिमा।

ॐ स्नान मन्त्र卐

मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत! माधव।
स्नाने दाने जपे देव! यथोक्त फलदो भव॥

प्रार्थना

दु:ख दारिद्रय नाशाय श्री विष्णो: तोषणाय च। प्रात: स्नानं करोम्यद्य माघे पाप विनाशनम्॥

सूर्य देव को अर्घ्य

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकर॥

यदि कोई प्रयाग तीर्थ न जा सके तो जिस नदी तालाब या गृहादि में स्नान करते समय श्रद्धा से यह मन्त्र पढ़े-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी, सरस्वती, नर्मदे, सिन्धु, कावेरि जलेस्मिन संनिधिं कुरु॥

गायत्री मन्त्र एवं इष्ट मन्त्र का जाप तथा सत्संग अवश्य करें।

क्षमा, दया, दान, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, देव पूजा, हवन, सेवा-सन्तोष, चोरी न करना आदि नियमों का भी ध्यान रखें।

जय श्री राम

नवम्बर महीने के व्रत-त्योहार आदि

1 **नवम्बर : बुधवार** : ज्ञान पंचमी (जैन), पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी, दशमी पातशाही श्री गुरु गोबिन्द सिंह का ज्योति ज्योत समाए दिवस (स्थान श्री नांदेड़ साहिब) 2. : **वीरवार** : सूर्य षष्ठी, डाला षष्ठी: 4 : **शनिवार** : श्री दुर्गा अष्टमी, गोपाष्टमी, गोपूजा, गो श्रृंगार, 5 : **रविवार** : कुष्मांड नवमी, आमला नवमी, अक्षया नवमी, दोपहर 12 बज कर 28 मिनट पर पंचक प्रारंभ : 6 : **सोमवार** : मेला अचलेश्वर (बटाला, पंजाब); 7 : **मंगलवार** : (देव) हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत स्मार्तों का, भीष्म पंचक प्रारंभ, चातुर्मास्यव्रत नियम आदि समाप्त, मेला रेणुका, (नाहन) एवं मेला रुद्रानंदी नारी (ऊना, हिमाचल), प्रारंभ, तुलसी विवाहोत्सव शुरू, श्री पंढरपुर यात्रा (महाराष्ट्र) ; 8 : **बुधवार** : देव (हरि) प्रबोधिनी एकादशी व्रत वैष्णवों का, तुलसी विवाह; 9 : **वीरवार** : प्रदोष व्रत, जन्म दिवस श्री वीर वैरागी (नकोदर, पंजाब) 10 : **शुक्रवार** : पंचक सूर्योदय से पहले प्रात: 5 बजे कर 54 मिनट पर समाप्त, वैकुण्ठ चतुर्दशी, श्री विद्यापति जयंती; 11 : **शनिवार** : श्री सत्य नारायण व्रत, स्नान दान आदि की कार्तिकी पूर्णिमा, पहली पातशाही श्री गुरू नानक देव जी महाराज का जनमोत्सव (पवित्र स्थान–श्री ननकाना साहिब–पाकिस्तान, श्री निम्बाकाचार्य जयंती, मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पंजाब), मेला बाबा रुद्रानंदी नारी (ऊना), मेला रेणुका (नाहन, हिमाचल), मेला पुष्कर राज (अजमेर, राजस्थान), मेला कपालमोचन (हरियाणा), मेला जांगी पांगा (ऊना, हिमाचल), कार्तिक स्नान एवं भीष्म पंचक तथा चातुर्मास व्रत नियम समाप्त, रथयात्रा (जैन), तुलसी विवाह समाप्त, मेला गढ़गंगा (उत्तर प्रदेश); 12 : **रविवार** : मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारंभ, महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी की पुष्य तिथि, शब-ए-बारात, 14 : **मंगलवार** : श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रमा रात 7 बजे कर 53 मिनट पर उदय होगा, पंड़ित जवाहर लाल नेहरू जी का जन्म दिवस, बाल दिवस; 15 : **बुधवार** : सूर्य की वृश्चिक संक्रांति, मार्गशीर्ष (मग्घर) महीना प्रारंभ, पुण्य काल अगले दिन; 16 : **वीरवार** : संक्रान्ति का पुण्य काल प्रात: 10 बज कर 18 मिनट तक; 17 : **शुक्रवार** : लाला लाजपत राय जी का बलिदान दिवस; 18 : **शनिवार** : काल अष्टमी, श्री महाकाल भैरव जयंती, मासिक कालाष्टमी व्रत, भैरव अष्टमी; 20 : **सोमवार** : श्री महावीर दीक्षा दिवस (जैन); 21 : **मंगलवार** : उत्पन्ना एकादशी व्रत, सूर्य सायं धनु राशि में प्रवेश करेगा; 22 : **बुधवार** : राष्ट्रीय महीना मार्गशीर्ष प्रारंभ; 23 : **वीरवार** : प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर जी की पुण्यतिथि; 24 : **शुक्रवार** : मासिक शिवरात्रि व्रत, मेला पुरमंडल देविका स्नान (जम्मू-कश्मीर), श्री बाला जयंती; 25 : **शनिवार** : शनैचरी अमावस; 26 : **रविवार** : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारंभ; 27 : **सोमवार** : चंद्र दर्शन; 28 : **मंगलवार** : मुसलमानी महीना, रमज़ान ए रोजा शुरू रमज़ान का पहला दिन; 30 : **नवम्बर** : **वीरवार** : वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।

(पंजाब केसरी से साभार)

–पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी

पूज्य श्री संत सुभाष शास्त्री जी महाराज

के

कार्यक्रम

नवम्बर–2000

दिनांक	कार्यक्रम	स्थान	संयोजक
6 नवम्बर से 13 नवम्बर	श्रीमद् भागवत महापुराण कथा	शक्तिनगर ऊधमपुर	सत्संग समिति
14 नवम्बर	सत्संग	नौग्रां (बिश्नाह्)	पं॰ राकेश शर्मा जी
15 नवम्बर	सत्संग	अखंड परमधाम नौनाथ घगवाल	आश्रम समिति
16 नवम्बर	सत्संग	मैरां मादरया (अखनूर)	सुश्री ज्योति देवी
17 नवम्बर	देवी जागरण	म. नं. 92 गुढ़ा बख्शीनगर,	श्री प्रकाश सिंह जी घई
19 नवम्बर से 26 नवम्बर	श्रीमद् भागवत महापुराण कथा	बडला निचला (कूटा)	शिष्य मंडल
28 नवम्बर से 5 दिसम्बर	श्रीमद् भागवत कथा	श्री शिव मंदिर विकास नगर, सरवाल जम्मू।	श्री दीनानाथ जी खजूरिया

"परमज्योति" कार्यकर्त्ताओं की सूची

1. श्री राधेश्याम जी खजूरिया, दूधगंगा, ऊधमपुर
2. श्री रामकृष्ण जी टिक्कू, कठुआ
3. श्रीमती सुरेंद्र जी, प्रधानाचार्य, कास्मिक हार्ट महाविद्यालय, कठुआ
4. डॉ. प्रीतम चन्द जी लम्ब, बसोह्ली
5. श्री विनोद जी रियोथिया, सुकराला देवी
6. मा. श्री शादी लाल जी गुप्ता, बिलावर
7. श्री राजेन्द्र जी डोगरा, महानपुर
8. सर्वश्री लेख राज जी एवम् प्रकाश चंद जी बंगोत्रा, नौनाथ
9. श्री ध्रुव जी शर्मा, नौनाथ
10. मा० श्री दुर्गा दास जी, प्रंगोली (हीरा नगर)
11. डा० गया प्रसाद जी बख्शी, बगनौटी (नौशहरा)
12. श्री अरूण जी गोयल, प्रबन्धक, जे. एंड. के. बैंक, सुन्दरबनी
13. श्री पवन कुमार जी गुड़ा ब्रह्मना (अखनूर)
14. श्री महेश जी शर्मा, जे० ई०, दबलैहड़
15. डा० सदानंद जी शर्मा, दबलैहड़
16. श्री राजेश जी बिट्टू, आर० एस० पुरा
17. श्री शमशेर सिंह जी, कौटली चाड़कां (बिश्नाह)
18. श्रीमती शशी जी गोयल, प्रधानाचार्य, दुर्गा फाऊंडेशन पद्म विद्यालय, गुड़ा छबीलियां, जम्मू
19. कु० हैप्पी जी मन्हास, पलौड़ा- जम्मू
20. श्री कर्ण सिंह जी, पलौड़ा- जम्मू
21. श्री राजकुमार जी, रेशमघर कालोनी, जम्मू

ॐ

संत श्री सुभाष शास्त्री जी महाराज

S K KAPOOR